ज्ञानामृत

सितम्बर, 1985 वर्ष 21 ❋ अंक 3 मूल्य 1.50

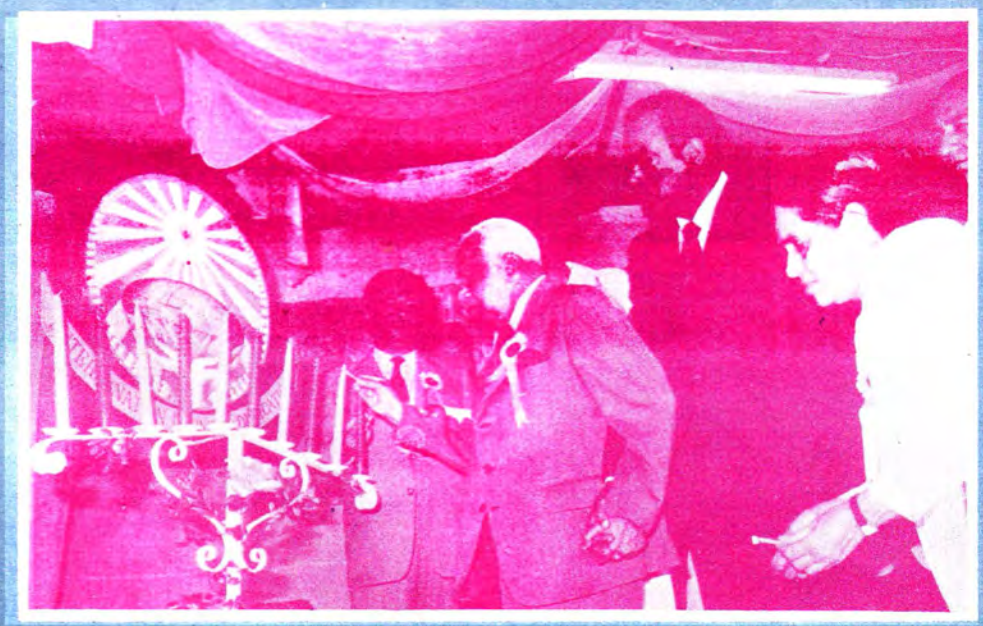

1. बम्बई से दिल्ली 'भारत एकता युवा पदयात्रा' के पदयात्रियों को ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी आत्म-स्मृति का तिलक देते हुए
2. मॉरीशयस में ब्र० कु० ई. वि. विद्यालय के सेवा केन्द्र का दसवां वर्षगांठ का उद्घाटन समारोह (बाएं से) मॉरीशियस के प्रधान मन्त्री, गवर्नर जनरल सर सिव सागर रामगुलाम, ब्र० कु० निर्वैर जी तथा ब्र० कु० चन्द्रा तथा अन्य उपस्थित हैं।

नेरोबी में ब्र० कु० जगदीश चन्द्र जी इयुचेरिस्टिक काँग्रेस के पश्चात् पोप जोहन पाल-२ को सृष्टि-चक्र की व्याख्या करते हुए। बाएँ ओर ब्र० कु० वेदान्ती अफरीका के सेवा केन्द्रों की संचालिका खड़ी हैं।

मॉरीशयस में हुए 'शिक्षा में मानव मूल्य तथा नैतिकता' सम्मेलन में (बाएं से) प्रो. रामदायाल, ब्र० कु० निर्वैर जी, भ्राता परसूराम, शिक्षा-मंत्री, डा. डी. बी. रामनॉथ, तथा ब्र० कु० गायत्री।

नई दिल्ली में ब्र० कु० शान्ति भारत के उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता पी० एन० भगवती को ईश्वरीय सन्देश देते हुए।

भरतपुर सेवाकेन्द्र से निकाली गई भारत एकता युवा पदयात्रा का एक ग्रुप। साथ में ब्र० क०, बिमला, कविता तथा अन्य भाई बहिन।

बालेश्वर (उड़ीसा) सेवा केन्द्र की ओर से 'भारत एकता युवा पदयात्रा' के आगमन पर युवा महोत्सव का आयोजन किया गया। बालेश्वर के कलकटर भ्राता ईश्वर दास जी तथा रोटरी क्लब के अध्यक्ष डा. हरीश चन्द्र जैन उद्घाटन करते हुए।

कन्याकुमारी–देहली भारत एकता युवा पद यात्रा के आन्ध्र प्रदेश में प्रवेश होने पर ब्र० कु० लक्ष्मी ब्र० कु० सुन्दरी को शिव ध्वज थमाते हुए।

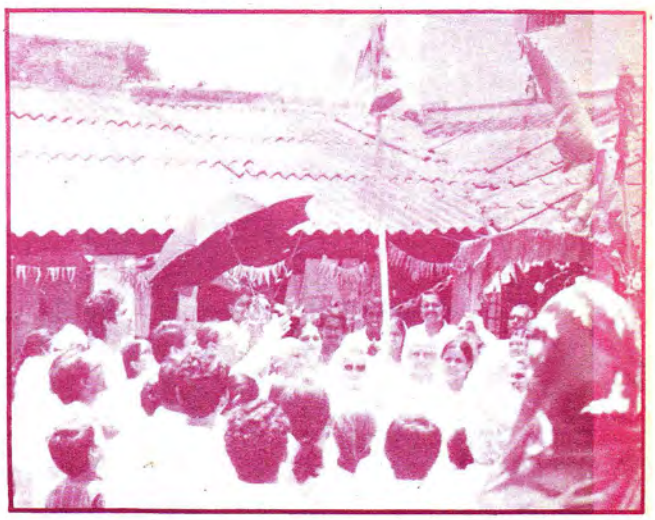

जटनी में नए सेवा केन्द्र का उद्घाटन करती हुई ब्र० कु० दादी प्रकाश मणि जी।

कलकत्ता से गुजरती हुई 'भारत एकता युवा पद यात्रा' का दृश्य।

Regd No. 10563/65·D(E)·70

कलकत्ता से कोननगर पहले दिन की यात्रा के पश्चात् सायं स्वागत समारोह में स्वागत भाषण करती हुई बहिन बसन्ती चौधरी। साथ में ब्र० कु० दादी निर्मलशान्ता, ब्र० कु० बिन्दु तथा कानन विराजमान हैं।

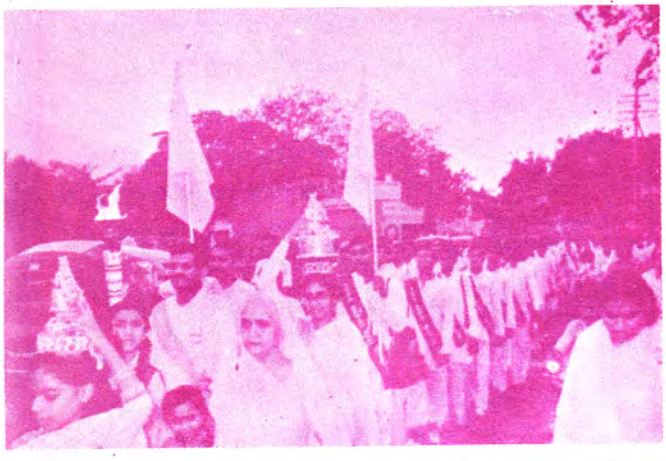

सोमनाथ से दिल्ली भारत एकता युवा पदयात्रा जूनागढ़ से गुजरती हुई।

कन्याकुमारी– दिल्ली भारत एकता युवा पदयात्रा के हैदराबाद पहुंचने पर भव्य स्वागत दृश्य। ब्र० कु० कुलदीप कलश के साथ।

मणीनगर नगर सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित अहमदाबाद से बारजा गांव तक की 'युवा जागृति पद यात्रा' का उद्घाटन करती हुई ब्र० कु० मनोहर इन्द्रा बहिन।

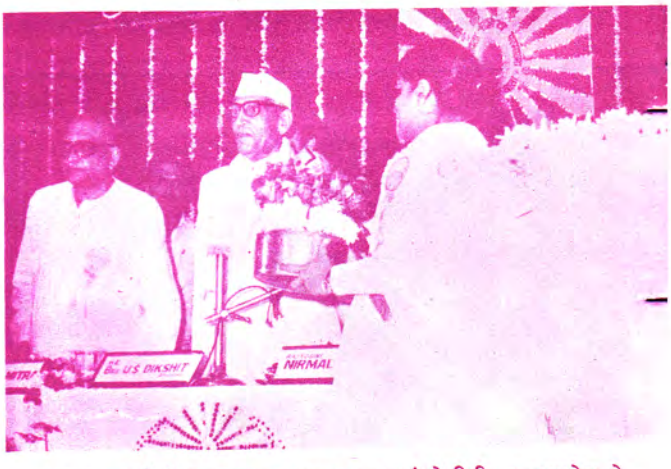

कलकत्ता में 'भारत एकता युवा पदयात्रा' के निमित्त समारोह के उद्घाटन पश्चात् प. बंगाल के राज्यपाल महामहिम उमां शंकर दीक्षित जी ने ब्र० कु० बिन्दु बहिन को ज्ञान कलश दिया। साथ में भ्राता शंकर प्रसाद मित्रा संसद संदस्य खड़े हैं।

अमृत-सूची

क्रम सं०	विषय	पृष्ठ
१.	बम्बई तथा सोमनाथ से 'भारत एकता युवा पदयात्रा' आरम्भ	१
२.	मित्र-भाव (सम्पादकीय)	२
३.	गणपति-रहस्य	५
४.	जितना गुड़ डालोगे उतना मीठा होगा	६
५.	सचित्र सेवा समाचार	१०
६.	भारत एकता युवा पद यात्रा (कविता)	११
७.	दिल कहे बाबा तेरा शुक्रिया	१२
८.	ईमानदारी से ही सर्व की उन्नति सम्भव	१४
९.	राजयोग का सुखद पथ	१७
१०.	युवा शक्ति	२०
११.	भारत की अखण्डता अमर रहेगी	२१
१२.	सचित्र समाचार	२४
१३.	और अब शान्ति का वर्ष आगामी वर्ष १९८६	२५
१४.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	२८
१५.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	३०

बम्बई तथा सोमनाथ से 'भारत एकता युवा पदयात्रा' आरम्भ

रविवार दिनांक ४-८-८५ को बम्बई से दिल्ली 'भारत एकता युवा पदयात्रा' का शुभारम्भ बम्बई के प्रसिद्ध ताज होटल में एक भव्य समारोह के द्वारा हुआ। यह कार्यक्रम इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी तपस्वी-मूर्त्त दादी प्रकाशमणि जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। भ्राता वसंत दादा पाटिल, भूतपूर्व मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र, भ्राता वी० मोहिते पाटिल, मिनिस्टर फॉर यूथ, स्पोर्टस एण्ड एगरीकलचर मुख्य मेहमानों के रूप में पधारे। इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने वाले अन्य कुशल वक्ता—नानी पालकीवाला, आबू से पधारीं, मोहिनी बहन जी राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी नलिनी बहन, घाटकोपर सेवाकेन्द्र की संचालिका, अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग केन्द्र की संचालिका ब्रह्माकुमारी योगिनी बहन भी मंच पर उपस्थित थे।

प्रात ९.०० बजे भ्राता ब्र० कु० रमेश शाह ने संस्था का संक्षिप्त परिचय देते हुये कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। नानी पालकीवाला तथा वसंत दादा पाटिल ने संस्था की गतिविधियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। नलिनी बहन ने पदयात्रा का उद्देश्य सबके समक्ष रखा, योगिनी बहन ने सभी से प्रतिज्ञा करवाई। दादी प्रकाशमणि जी ने अपने प्रभावशाली रूहानी व्यक्तित्व एवं अनुभवपूर्ण वचनों से सभी का मन मोह लिया। सभा में बैठे बहुत से व्यक्तियों ने अपने आपसे बुराइयाँ निकालने की प्रतिज्ञा की। उसी कायक्रम के दौरान 'सहेली' नामक संस्था की ओर से दादी जी को विशेष सम्मान दिया गया।

अन्त में सभी पदयात्रियों को मंच के समीप बुलाया गया। सभी पदयात्री संगीत की धुन पर रूहानी सेनानी बन मार्चिंग करते हुये आगे बढ़। दादी जी अपने शुभ हस्तों से सभी को आत्म-स्मृति का तिलक दिया। वसंत दादा पाटिल ने सभी भाइयों की युवा वर्ष का झंडा दिया। भारत एकता युवा पदयात्री हर्षित चेहरा लिये चल पड़े अपने उद्देश्य की पूर्ति करने। बहुत ही आकर्षक दृश्य लग रहा था। सभी गेट वे ऑफ इंडिया पर एकत्रित हुये जहाँ पर हजारों की संख्या में लोग मौजूद थे। दिल्ली तक जाने वाले पद-यात्रियों व सहयात्रियों के अतिरिक्त लगभग १५०० ब्राह्मण कुलभूषणों ने भी बम्बई में पदयात्रा की।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

सम्पादकीय

मित्र-भाव

कई बार ऐसा होता है कि हमारा कोई मित्र हमें बताता है कि लोग हमारे व्यक्तित्व अथवा व्यवहार में अमुक कमी अथवा त्रुटि महसूस करते हैं। उस समय उसकी इस बात को सुनकर, योगाभ्यासी होने के नाते, हमें बुरा महसूस तो नहीं करना चाहिए, परन्तु देखा गया है कि प्रायः सुनाने वाले के प्रति सुनने वाले की प्रतिक्रिया घणात्मक और अपनी स्थिति प्रायः खेदजनक होती है। अब प्रश्न उठता है कि ऐसा क्यों होता है और वास्तव में उस समय हमारा व्यवहार और हमारी प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए? मेरे विचार में हमें निम्नलिखित बातों पर ध्यान रखकर निर्णय करना चाहिए :—

मित्र द्वारा आलोचना सुनाये जाने पर प्रतिक्रिया

हमें यह देखना चाहिए कि हमारा जो मित्र जब हमें हमारी कमियों और कमज़ोरियों को बता रहा है, उस समय उस मित्र का हाव-भाव, उसकी मनोस्थिति और उसका अभिप्राय क्या है। यदि उसकी बातचीत से ऐसे लगता है कि हमारे प्रति उसकी सहानुभति पहले की तरह बनी हुई है और वह हमारे ही भले अथवा उन्नति के लिए अथवा लोगों की दृष्टि में हमारे व्यक्तित्व को और ऊँचा उठाने के लिए हमें यह सब बता रहा है तो हमें न स्वयं को अपमानित महसूस करना चाहिए, न ही ऊँचा नीचा बोलकर मित्र से सम्बन्ध बिगाड़ना चाहिए और न ही मित्र की बात को बुरा मानना चाहिये। उसे यह नहीं कहना चाहिए कि—"मालम होता है कि अब आपको भी लोगों द्वारा बताई ऐसी बातें ठीक लगने लगी हैं।" अथवा कि "अरे, अब आप भी उनके बहकावे में आ गए हैं" अथवा कि "वे सब तो झूठे हैं, आपने उन्हें कड़ाकेदार जवाब क्यों नहीं दिया?" अथवा "आपकी क्या दोस्ती हुई, आप उनकी ऐसे ही व्यर्थ बातें सुन लेते हैं और उन्हें कुछ ठीक जवाब नहीं देते।" हमें पहले सुन तो लेना चाहिए, कि वह क्या कहना चाहता है। हो सकता है कि हमारे मित्र ने निंदकों को कोई जवाब दिया भी हो।

हमें यह भी याद रखना चाहिये कि अपने मित्र से इन शब्दों और ऐसे लहजे से बात करने से तो हम अपने मित्रों को भी दुश्मन बना बैठेंगे। हमारे प्रति उनके ये विचार बन जायेंगे कि हममें सहनशक्ति नहीं है और कि हम अपने बारे में उन्नति की कोई भी बात सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। हमारे मित्र को यह भी महसूस होगा कि अब हम उसमें भी अविश्वास करने लगे हैं और कि उसके साथ हमारी मित्रता केवल एक कच्चे घड़े की तरह से है जो थोड़ी-सी ठोकर लगने से टूट सकती है।

इसके अतिरिक्त हमें यह सोचना चाहिए कि अगर हमारा मित्र भी हमारी अपूर्णताओं की ओर हमारा ध्यान नहीं खिंचवाएगा और लोगों द्वारा की गई आलोचनाओं से हमें अवगत नहीं कराएगा, तो कौन हमें यह सब बताएगा? जिस व्यक्ति को हम अपना विरोधी या प्रतिद्वन्दी मानते हैं, वह यदि हमारी नुक्ताचीनी करेगा तब तो हम वैसे ही सोचेंगे कि हमसे विरोध होने के कारण ये ऐसी बातें कर रहा है और इसलिए हम उनकी बातों पर ध्यान दिए बिना सुनी बात को भी अनसुना कर देंगे। अतः यदि हमारा कोई मित्र हमारी उन्नति के प्रयोजन से, लोगों में हमारी प्रतिष्ठता को बढ़ाने के अभिप्राय से, हमारे दोषों, हमारी भूलों, हमारे अवगुणों अथवा हमारी अपूर्णताओं को हमें सुझाता है, तो हमें समझना चाहिए कि ये तो उसकी मैत्री, कृपा अथवा सेवा है, अथवा शुभ भावना है। हमें उसका धन्यवाद करना चाहिए कि उसने हमारी उन्नति के लिए हमें सतर्क अथवा सावधान किया।

हाँ, यदि हमें ऐसा महसूस हो कि हमारा मित्र आज जब लोगों द्वारा होने वाली हमारी निंदा की कहानी हमें सुना रहा है, तब वह स्वयं भी हमारे

प्रति उत्तेजित है और सहानुभूति करने की बजाय घृणा कर रहा है, और अपनी ओर से कुछ बातें उसमें जोड़कर हमारा उत्साह भंग करना चाहता है, अथवा अपनी किसी बात को सिद्ध करने के लिए लोगों को कही हुई बातों का हवाला देकर हमें घटिया बनाना चाहता है अथवा कि लोगों द्वारा निराधार आरोपों को सुनकर भी उसने कोई प्रतिरोध नहीं किया, तब हमें उसकी बताई हुई बातों का वैसा स्वागत नहीं करना चाहिए, जैसे कि हम पहले करते थे, परन्तु फिर भी उससे अपने सम्बन्ध बिगाड़ने से हमें क्या लाभ हैं? उसके प्रति अपना मित्र-भाव मिटा देने का भी क्या प्रयोजन है? ठीक है, हम उसकी सभी बातों को या अधिकतर बातों को न मानें परन्तु किसी समय उस पर विचार तो करें और उसे इतना तो कह दें कि— "अच्छा मित्र, आपने यह सब हमारी उन्नति के लिए हमें बताया है, हमें इस समय ऐसा लगता नहीं कि यह सब बातें ठीक हैं, परन्तु फिर भी हम इस पर विचार करेंगे। आपने हमारा ख्याल रखा, उसके लिए धन्यवाद।"

विरोधी द्वारा नुक्ताचीनी

इसके विपरीत यदि कोई ऐसा व्यक्ति हो जो प्रायः हमारा विरोध करता है, यदि वह हमारे कार्य या व्यवहार में भूलें निकालता है, उसका वर्णन करता है तो उन्हें भी हमें तत्काल रद्द नहीं कर देना चाहिए। किसी की बात को पहले पूरी तरह सुन लेना ही शिष्ट और सभ्य व्यक्ति का आभूषण है। अतः यदि कोई व्यक्ति निष्प्रयोजन और व्यर्थ ही बात को लम्बा-चौड़ा बना कर कुछ उलूलजलूल कह रहा है, उसे चाहे हम न सुने, परन्तु यदि कोई व्यक्ति धीरज से और शिष्ट रीति से अपनी बात कह रहा है तो हमें उसे सुन लेना चाहिए। यदि वातावरण अनुकूल है तो हम उन बातों का निषेध भी प्रस्तुत कर सकते हैं और उनमें से कोई बात ठीक है तो उसे नपे-तुले शब्दों में स्वीकार भी कर सकते हैं। परन्तु यदि किसी विरोधी की बात को सुनते समय भी हम उछल पड़ते हैं तो हमारी और कोई भूल न भी हो तो उछलना तो हमारी भूल होती ही है। विरोधी की बात को हमें सदा इसी बात से नहीं देखना चाहिए कि ये तो विरोधी है, ये पहले भी ऐसा कहता ही आया है और अब भी जो कुछ कह रहा है, ये उसका विरोध-भाव ही है। उसकी बहुत सारी बातें विरोध भाव के प्रयोजन से कही गयी हैं। परन्तु जिस अंश में ठीक है; उतना तो मानना ही चाहिए और वह भी ऐसे तरीके से, जिससे हमारे जीवन में परिवर्तन आ जाए!

अपने अन्तर्मन की स्थिति पर विचार

ऊपर हमने मित्र और विरोधी द्वारा हमें कही या बताई गई कमियों की चर्चा की है। परन्तु अब हम अपने अन्तर्मन में झाँककर देखें कि जब हमारी कमियाँ हमें कोई बताता है, इनमें कोई नुक्स निकालता है, या हमारे कार्य को घटिया सिद्ध करने की कोशिश करता है तो उस समय हमारी स्थिति क्या होती है? हम उस व्यक्ति को किस दृष्टि से देखते हैं? क्या हमें वह बात चुभती है और हम उस व्यक्ति से घृणा करने लगते हैं और उस मित्र के प्रति भी हम निरुत्साहित और उदासीन हो जाते हैं? क्या जब कोई विरोधी हमारी निन्दा करता है तो हममें क्रोध की आग भड़क उठती है, घृणा का ज्वारभाटा आता है और उस व्यक्ति के प्रति हममें दुर्भावना जागृत होती है? क्या हमें ऐसा महसूस होता है कि हमारा जीवन अभी तक नैतिक रूप से अविकसित है और हमारी कमियाँ मिट ही नहीं रहीं और हम अपने जीवन को एक अभिशाप या धिक्कार मानने लगे हैं, और स्वयं से ही नफ़रत करने लगते हैं? क्या उस समय हमारा उत्साह भंग हो जाता है तथा हम उज्ज्वल भविष्य की आशा छोड़कर थके-थके से, शिथिल हुए से अथवा अन्य सभी की तुलना में स्वयं को एक निम्न कोटि का व्यक्ति मनाने लगते हैं? क्या हम ऐसा महसूस करते हैं कि इससे आगे बढ़ना हमारे लिए

सम्भव नहीं है, और कि बार-बार निंदित होने के बावजूद भी हम न सुधर सके, एक ऐसे व्यक्ति बन चुके हैं जिसका देवत्व के ऊँच शिखर पर पहुंचना किसी असम्भव लक्ष्य की चेष्टा करने जैसा है। यदि इन जैसा कोई भाव हमारे मन में आता है तो ईश्वरीय ज्ञान की भाषा में हम अपने शत्रु आप ही बन जाते हैं, "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत", यह एक आध्यात्मिक उक्ति है। अगर हम स्वयं ही हार मान बैठें तो घृणा, द्वेष इत्यादि नकरात्मक प्रवृत्तियों, जिससे ही हमारा युद्ध है, को परास्त करने की बजाए उनके आगे हथियार डाल दें, तब तो हमें कोई भी जिता नहीं सकता। यदि हम स्वयं ही अपने मित्र हैं तो—"निंदा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोए"—इस उक्ति के अनुसार हम अपनी स्थिति को प्रशंसात्मक अथवा विरोधात्मक शब्दों से डगमगाने नहीं देंगे, बल्कि निर्णय शक्ति का प्रयोग करते हुए सदा स्वयं को उन्नति के पथ पर आगे ले जाने के लिए तत्पर रहेंगे। इसीलिए ही बाबा ने कहा है—"आत्मा अपना मित्र और अपना शत्रु आप ही है।" अन्य को देखने के बजाय तो पहले हमें यह देखना चाहिए कि क्या हम स्वयं के मित्र हैं ?

—जगदीश

(शेष पृष्ठ ४ पर)

बम्बई तथा सोमनाथ से 'भारत एकता यवा पदयात्रा' आरम्भ

जूनागढ़— ११ अगस्त गुजरात के राज्यपाल भ्राता बी० के० नेहरू तथा ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि द्वारा कलश, मशाल और ध्वज पद-यात्रियों को प्रदान किया गया। पदयात्रा उद्घाटन समारोह बड़े ही उमंग, उत्साह से सम्पन्न हुआ। सोमनाथ बाबा की प्रथम द्वापरयुगी यादगार सोमनाथ के मन्दिर के प्रांगण में लगभग ५००० भक्तों एवं बच्चों का समूह हर्षोल्लास में झूम रहा था। स्वयं राज्यपाल महोदय, उनकी धर्मपत्नी एवं दादी जी तथा अन्य ब्र० कु० भाई-बहिनें पद-यात्रा के साथ कुछ दूर चले तथा भाव-भीनी विदाई दी। १२ अगस्त को वीरावल में दादी जी ने पद-यात्रियों को पवित्रता और मर्यादाओं की सूचक राखी बांधी।

'भारत-नेपाल (संयुक्त) युवा शान्ति यात्रा'

इस हिमालियन रैली का आयोजन प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय, वाराणसी द्वारा किया जा रहा है। यह रैली दिनांक २५ सितम्बर, १९८५ को हिमालय के अंचल में स्थित पोखरा (नेपाल) केन्द्र से प्रारम्भ होगी। नेपाल तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के सभी केन्द्रों, उप-केन्द्रों तथा मुख्य-मुख्य गीता पाठशालाओं और उत्तरप्रदेश के अन्य केन्द्रों से होती हुई यह बस-cum-पदयात्रा लगभग १७५० कि० मी० की दूरी ५ सप्ताह में पूरा करेगी और दिल्ली २३ अक्टूबर को पहुंच जायेगी। इस युवा शान्ति-यात्रा में नेपाल के १२ तथा पूर्वी उत्तरप्रदेश के केन्द्रों के ३० युवा भाई बहनें एवं १० ब्रह्माकुमारी टीचर्स बहन भाइयों का प्रबन्ध स्टाफ साथ रहेगा। यह शान्ति-यात्रा निर्जन स्थानों में बस द्वारा तथा रास्ते में पड़ने वाले मुख्य-मुख्य ग्रामों में पद-यात्रा, शहर व कस्बों के आने व छोड़ने पर पद-यात्रा एवं बड़े शहरों के आने पर रूटमार्च करते हुए ग्राम विकास प्रदर्शनी, प्रवचन, वीडियो व अन्य साधनों द्वारा ईश्वरीय सन्देश के कार्यक्रम करते हुए जायेगी। इस रैली का रूट निम्न प्रकार है :—

पोखरा (नेपाल)—बुटवल—भैरहवा (नेपाल)—गोरखपुर — आजमगढ़ — मऊ— बनारस — चुनार — मिर्जापुर — इलाहाबाद— फतेहपुर—कानपुर — इटावा — फिरोजाबाद — सादाबाद—हाथरस— अलीगढ़— बुलन्दशहर — गाजियाबाद—दिल्ली।

गणपति-रहस्य

भारत में काफ़ी बड़ी संख्या में लोग गणपति की पूजा, अर्चना व साधना करते हैं। अन्य बहुत-से लोग जिनके वे इष्ट नहीं हैं, मुहूर्त अथवा अन्य उत्सवों एवं अन्य शुभ अवसरों पर सभी धार्मिक आयोजनों का प्रारम्भ गणपति की ही स्तुति से करते हैं। लाखों-करोड़ों व्यापारी अपने बही-खातों के प्रारम्भ में अथवा अपने व्यापार की गद्दी के निकट स्थल पर स्वास्तिक का चिन्ह अंकित करते हैं जिसे वे गणपति का सूचक, शुभ तथा लाभप्रद मानते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि एक ओर तो गणपति को लाखों-करोड़ों नर-नारी सब देवताओं से प्रथम स्तुत्य मानते हुए अपने कार्यों की निर्विघ्नता पूर्वक समाप्ति के लिए अर्चना करते हैं। यहाँ तक कि साधक लोग स्वयं परमात्मा शिव की उपासना मानते हुए कहते हैं कि "पहले गणपति गणेश मनाया करो, पीछे भोला जी के दर्शन पाया करो।" परन्तु दूसरी ओर ऐसे भी लोग हैं जो गजवदन, वक्रतुण्ड (मुड़ी हुई सूँड), एकदन्त, महोदर (बड़ी पेट), मूषक (चूहा) वाहक आदि को देख कर आश्चर्यान्वित होते हैं और यह जानने की जिज्ञासा रखते हैं कि गणनायक कौन है और गणनायक तथा स्वास्तिक का परस्पर क्या मेल है अर्थात स्वास्तिक को गणपति का प्रतीक क्यों माना जाता है? उसके मन में ये भी प्रश्न उठता है कि गणपति की स्तुति सबसे पहले क्यों होती है और वे विघ्न-विनाशक कैसे है?

गणपति के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए तथा ऊपर लिखे गए प्रश्नों का समाधान करने के लिए उनसे सम्बन्धित जो प्रतीक हैं उनकी व्याख्या करना आवश्यक है। परन्तु प्रतीकों का रहस्य स्पष्ट करने से पहले हम यह बताना चाहते हैं कि भारतीय साधना एवं उपासना प्रणाली में परमपिता परमात्मा के जो विभिन्न गुण हैं उनको भारतीय मूर्तिकारों तथा चित्रकारों ने विभिन्न प्रतीकों द्वारा अभिव्यक्त किया है। उदाहरण के तौर पर ज्ञान के सागर परमपिता परमात्मा से जो सद्विवेक प्राप्त होता है, उसे उन्होंने सरस्वती के वाहन हंस के रूप में चित्रित अथवा मूर्ति का रूप प्रदान किया है। इसी प्रकार धन, संपदा और वैभव प्राप्त होने पर भी उनमें अनासक्त भाव को लक्ष्मी के कमलपुष्प के रूप में अभिव्यक्त किया है और स्वयं लक्ष्मी को कवियों ने कमला नाम भी दिया है। इस परिपाटी को सामने रखते हुए जब हम गणपति के चित्र को अनुकूल रीति से देखते हैं तो निम्नलिखित भाव स्पष्ट रूप से हमारे सामने आते हैं।

१. हाथी का सिर

मनुष्य को जितने पशु-पक्षियों का ज्ञान है उनमें से हाथी (गज) ऐसा जीव है जिसे बुद्धिमान माना जाता है। हाथी का सिर विशाल होता है और ये मान्यता प्रचलित है कि हाथी की स्मृति तेज़ होती है। वो अपने माहौल को भली-भाँति जानता है और उसे परख सकता है। इसलिए अंग्रेजी में भी कहावत है ("As wise as an elephant" and "as faithful as an elephant") जिस मनुष्य को आत्मा और परमात्मा का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त हो, और जिसे सृष्टि के आदि मध्य अंत का भी बोध हो, उसे संस्कृत भाषा में "विशाल बुद्धि" कहा जाता है और ऐसा विशाल बुद्धि व्यक्ति जिसे परमपिता परमात्मा की स्मृति बनी रहे और जो परमात्मा के प्रति निश्चयवान एवं श्रद्धावान (faithful) भी हो उसके सिर (जो कि बुद्धि का स्थान है) को भी हाथी ही के सिर के रूप में चित्रित करना युक्ति-युक्त है। आम व्यवहार में भी जब किसी व्यक्ति को बहुत-सी बातें याद रहती हैं और वह विशाल बुद्धि के जैसे बातें करता है तब सहज ही लोगों के

दिल से ये शब्द निकलते हैं "कमाल है, इसका तो हाथी जैसा दिमाग है !"

फिर हाथी की एक विशेषता और भी होती है। वो जब गली-मोहल्लों या बाज़ार में से गुज़रता है तो भले ही बन्दर उसे घूरकर देखते रहें या कुत्ते भौं-भौं करते रहें, वो मस्त रहता है और अपनी सूंड को हिलाते-डलाते शाही चाल से चलता रहता है। वो उनकी निकम्मी बातों की ओर ध्यान नहीं देता। न उनकी ओछी बातों से उत्तेजित होता है और न ही गाय, बकरी की तरह भागने लगता है, बल्कि आत्म-विश्वास पूर्वक अपने मार्ग पर अग्रसर होता है। ज्ञानवान और योगयुक्त व्यक्ति के भी ऐसे ही लक्षण होते हैं, इसलिए इन सभी गुणों को एक साथ प्रदर्षित करने के लिए हाथी ही का सिर सर्वथा उपयुक्त है।

२. हाथी की सूंड (तुण्ड)

आप सोचते होंगे कि अच्छा हाथी के सिर की बातें तो समझ में आ गई परन्तु इतने महान शिव सुत (शिवपुत्र) को भला संड क्यों दी गई है। परन्तु यदि आप संड की विशेषताओं पर ध्यान देंगे तो देखेंगे कि ऐसा करना ठीक है। ये तो आपको मालूम ही होगा कि हाथी की संड इतनी मज़बूत और शक्तिशाली होती है कि वो वक्ष को भी उखाड़कर, सूंड में लपेटकर ऊपर उठा लेता है, गोया वो एक बुलडोज़र और क्रेन (crane) दोनों का कार्य एक साथ कर सकता है। वो चाहे तो संड से किसी चीज़ को उखाड़ कर ऊपर उछाल दे और या उससे छोटे-छोटे बच्चों को भी प्रणाम करे। किसी को पुष्प अर्पित करें या पानी का लोटा चढ़ाकर किसी की पूजा करे। वो सूंड से केवल वृक्ष जैसी स्थूल चीज़ ही ग्रहण नहीं करता बल्कि सुई जैसी सूक्ष्म चीज़ को भी उठा सकता है। इसी प्रकार ज्ञानवान व्यक्ति भी अपनी स्थूल आदतों को भी जड़ों से उखाड़कर फेंकने में समर्थ है तथा सूक्ष्म-से-सूक्ष्म बातों को भी धारण करने के लिए और दूसरों को सम्मान, स्नेह तथा आदर देने में कुशल होता है। अपने पुराने संस्कारों को मूल से पकड़कर निकाल फेंकने के लिए भी हाथी अथवा उसकी सूंड जैसी आध्यात्मिक शक्ति चाहिए। इसलिए हाथी का केवल सिर ही नहीं बल्कि सूंड भी ज्ञानवान मनुष्य की कुछेक विशेषताओं का प्रतीक है।

३. गज कर्ण

हाथी के कान तो पंखे जितने बड़े होते हैं। भला ज्ञान-वान को इतने बड़े कान लेने की क्या आवश्यकता है ?

कान को तो मुख्य ज्ञानेन्द्री माना गया है। जब हम किसी को आवश्यक एवं महत्वपूर्ण बात बताते हैं तो कहते हैं कि कान खोलकर सुनो। गुरु भी जब अपने शिष्य को मंत्र देता है तो उसके कान ही में उच्चारण करता है। भगवान ने जब गीता-ज्ञान दिया तो अर्जुन ने कानों के द्वारा ही उसे सुना। अतः बड़े-बड़े कान ज्ञानश्रवण के प्रतीक हैं। वे ध्यान से, जिज्ञासापूर्वक, ग्रहण करने की भावना से पूरा चित्त देकर सुनने के प्रतीक हैं। इस विधि से सुनने के बिना मनुष्य विशाल बुद्धि हो ही नहीं सकता अथवा हाथी जैसे विशाल सिर का मालिक बन ही नहीं सकता।

ज्ञान की साधना में श्रवण, मनन व निधिध्यासन, ये तीन पुरुषार्थ बताए गए हैं, इनमें सबसे प्रथम तो श्रवण ही है। ज्ञान के सागर परमात्मा के विस्तृत ज्ञान का श्रवण इन बड़े कानों से समुचित है।

४. हाथी की आँखें

गणपति की आँखों को हाथी जैसी आँखों के समान चित्रित करने के पीछे गहरा राज़ है। हाथी के नेत्रों की ये विशेषता है कि उसे छोटी चीज़ भी बड़ी दिखाई देती है। जैसे उल्लू की आँखों की एक अपनी विशेषता यह है कि उसकी आँखों की पुतलियाँ सूर्य की रोशनी में चुंधिया जाती हैं, इसलिए वह उन्हें बन्द कर लेता है। बिल्ली की आँखों की विशेषता है कि रात्रि को अंधेरे में भी देखने में सक्षम रहती हैं वैसे ही हाथी की आँखों की ये

विचित्रता है कि उसे छोटी चीजें भी बड़ी दिखाई देती हैं। अगर उसे छोटी दिखाई देती होती तो वो सबको अपने पाँव के नीचे रौंदता हुआ चला जाता।

इसी तरह ज्ञानवान व्यक्ति का भी अपना एक विशेष गुण होता है, वो छोटों में भी बड़ाई देखता है। हरेक की महानता उसके सामने उभर आती है इसलिए वो हरेक को आदर देता है। उनके मन को अपने शब्दों से रौंदता नहीं। अतः ज्ञानो के नेत्रों को इस गुण के कारण हाथी के नेत्रों के रूप में चित्रित करना ठीक ही तो है।

५. गजवदन

हाथी जैसा मुँह, सिर, कान, आँख—ये सब मिला कर ज्ञानवान व्यक्ति के मुख को हाथी के मुख जैसा प्रदर्शित करने के पीछे भी प्रयोजन है। हाथी का मुख लम्बा-चौड़ा है, इसके विपरीत जब कोई व्यक्ति घबरा जाता है, अपने बुरे कामों के कारण पकड़ा जाता है तो लोग उसके बारे में कहते हैं—"उसका तो मुख ही छोटा हो गया है।" जब कोई कमज़ोर हो जाता है तब भी उसके बारे में कहते हैं कि इसका तो मुख ही आधा हो गया है। इस प्रकार बड़ा मुख अच्छे कर्मों के कारण निर्भयता का और आत्मिक शक्ति के कारण सामर्थ्य (दुर्बलता के अभाव) का प्रतीक है।

६. एकदन्त

हाथी के बाहर निकले हुए दो दाँत होते हैं जो दिखाने के होते हैं। इस संसार में दूसरे लोगों के द्वारा थोड़ा भी विघ्न न पड़े, उसके लिए यह ख्याल में रखकर चलना पड़ता है ताकि वे ऐसा ही न समझ लें कि हम उनके विघ्न डालने पर कोई कदम ही नहीं उठायेंगे। अपने कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए हमारे पास भी साधन, सम्पर्क और सामर्थ्य है, ऐसा भी कुछ रूप रखना होता है। अपने बचाव के लिए दो दाँत न सही, एक दाँत तो हमारे पास भी है—लोगों को यह मालूम रहने से वह कोई उल्टा कदम उठाने से टल जाते हैं। ये एक दाँत कोई किसी को हानि पहुँचाने के लिए नहीं हैं न ही यह दूसरे को भयभीत करने की रीति का प्रतीक है बल्कि यह एक नीति है। नीति-निपुणता भी एक कुशल व्यक्तित्व का मूल्यवान गुण है। नीति से हमारा अभिप्राय कटनीति नहीं है। मन की कुटिलता नहीं बल्कि सूझ, दूरदर्शिता और चतुराई से।

७. महोदर

आम बोलचाल में भी जब कोई व्यक्ति अच्छी-बुरी सब बातों को अपने में समा लेता है, तब उसके लिए कहा जाता है कि इसका तो बड़ा पेट है। इनको कोई भी बात सुना दी जाए तो ये बाहर नहीं निकालते। उर्दू के एक कवि ने इस विषय में निम्नलिखित शेर कहा है :—

"जो पेट के हलके हो, पचे बात कब उनसे,
रोके तो अफर जाए शिकस और ज्यादा।"

इस प्रकार पेट की बात को हज़म करने से सम्बन्ध जोड़ा जाता है। ज्ञानवान व्यक्ति के सामने भी निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, ऊँच-नीच की परिस्थितियाँ आती हैं, परन्तु वो उन सबको स्वयं में समा लेता है। लम्बा पेट (लम्बोदर) अथवा बड़ा पेट (महोदर) ज्ञानवान के इसी गुण के प्रतीक हैं।

८. एक हाथ में कुल्हाड़ा

गणपति की जो चार भुजाएँ दिखाई जाती हैं, उनमें से एक में कुल्हाड़ा दिखाया जाता है। कुल्हाड़ा तो काटने का एक साधन है। ज्ञानवान व्यक्ति में मोह-ममता के बन्धन काटने और पुराने संस्कारों का उन्मूलोछेदन करने की क्षमता होती है। उसी का प्रतीक ये कुल्हाड़ा है। जिसके जीवन में मोह-ममता का वास हो अथवा जिसके अपने पुराने संस्कार न बदलें, वो ज्ञानी ही कैसा ? अतः ज्ञान एक कुल्हाड़े की तरह से है जो उसके मन के जुटे हुए दैहिक नाते चूर-चूर कर देता है; तभी तो वह मुक्ति और जीवन-मुक्ति प्राप्त करता है। जो ज्ञान इस प्रकार कुल्हाड़े का कार्य नहीं करता वह वास्तव में ज्ञान ही नहीं है। गीता में भी ज्ञान को

तेज़ तलवार की उपमा दी गई है जिससे कि काम रूपी शत्रु को मारने के लिए कहा गया है। आसुरी संस्कारों को मार मिटाने के लिए यह ज्ञान रूपी कुल्हाड़ा जिसके पास है, वह आध्यात्मिक योद्धा ही ज्ञानी है।

दूसरे हाथ में बंधन (रस्सी)

गणपति के दूसरे हाथ में बन्धन दिखाया जाता है जो इस बात का प्रतीक है कि दैहिक बन्धनों को तो ज्ञान रूपी कुल्हाड़े से काटना है, परन्तु अब स्वयं को दिव्य नियमों रूपी बन्धन में बाँधना भी है। यह शुभ बन्धन है जिसमें मनुष्य अपनी ही भलाई के लिए बन्धना चाहता है। वास्तव में ये बन्धन नहीं बल्कि इन्हें सम्बन्ध कहना चाहिए आत्मा का परमात्मा के साथ नाता जुटाना भी तो प्रेम के बन्धन में बन्धना है। गणपति के हाथ में जो डोरे हैं वो इसी प्रेम के डोरे हैं अथवा वे दिव्य नियमों के शुद्ध बन्धन हैं। यदि ज्ञानी स्वयं को नियमों में नहीं ढालता तो गोया उसका ज्ञान आचरण में नहीं आता, तब तो वो ज्ञान एक गधे पर लदी हुई अच्छी पुस्तकों के बोझ की तरह हो जाता है जिसका लाभ उस गधे को नहीं होता।

ज्ञान और गुण एक ही सिक्के के दो पहलू हैं; अविच्छिन्न हैं और वे अलग नहीं किए जा सकते। यदि ज्ञान केवल सिद्धान्तों की जानकारी तक रह जाता है तो उसे ज्ञान न कहकर मात्र जानकारी कहना ही ठीक है, बल्कि वो भी ठीक नहीं है। वास्तव में "ज्ञान" शब्द के नियमों के बोध का ही पर्यायवाची है और उनका बोध होने के बाद उन नियमों में स्वयं को बाँधना, बसका ये स्वाभाविक परिणाम है। उसी का प्रतीक गणपति के एक हाथ में बन्धन दिखाया गया है।

एक हाथ में मोदक

"मोदक" शब्द लड्डू का भी वाचक है और खुशी प्रदान करने वाली वस्तु का भी। लड्डू बनाने के लिए भी चनों को पीसना, भीगना, भूनना पड़ता है तभी कहीं जाकर वह प्रिय पदार्थ बनता है। इसी प्रकार ज्ञानवान व्यक्ति को भी अनेक कठिनाइयों, संकटों, दुश्वारियों इत्यादि में से गुज़रना पड़ता है। दूसरे शब्दों में, उसे तपस्या करनी पड़ती है, जीते जी मरना होता है और इससे उसमें अधिकाधिक मिठास व ज्ञान का रस भरता है। तब वह स्वयं भी सदा मुदित रहता है और दूसरो को मुदित करता है। इस प्रकार हाथ में मोदक का होना ज्ञान-निष्ठ, ज्ञान-रस से सिक्त स्थिति का प्रतीक है और ज्ञान द्वारा प्राप्त मुदित अवस्था का परिचायक है।

साथ-साथ मोदक सफलता का भी सूचक है। जब किसी को अपने मनोरथ में अथवा अपने लक्ष्य की सिद्धि होती है, तब वह खूब लड्डू बाँटता है और उसको खुशी के उत्सव में बदल देता है। इसी प्रकार, ज्ञानवान व्यक्ति अपनी बुद्धि और स्थिति के बल से कार्य को निर्विघ्न रूप से करता हुआ सफलता तक ले जाता है और इसलिए स्वयं भी खुश रहता है और दूसरों को भी खुशी बाँटता है।

संक्षेप में, दूसरे शब्दों में, मोदक परिश्रम, तपस्या और बुद्धि के बल से सफलता और खुशी की प्राप्ति का सूचक है। परन्तु मोदक का हाथ में रखे रहना इस रहस्य का द्योतक है कि ज्ञानवान व्यक्ति स्तुति, महिमा, सफलता से होने वाले गर्व को आन्तरिक रूप से स्वीकार कर उसके रस द्वारा मदोन्मद नहीं होता।

वरद् मुद्रा

गणपति का एक हाथ सदा वरद् मुद्रा में प्रदर्शित किया जाता है क्योंकि जो ज्ञानवान व्यक्ति पूर्वोक्त लक्षणों को धारण कर लेता है, वह दूसरों को भी निर्भयता और शान्ति का वरदान देने की सामर्थ्य वाला हो जाता है। उसकी स्थिति ऐसी महान हो जाती है कि वह अपनी शुभ मनसा से दूसरों को आशीष प्रदान कर सकता है। अतः वरद् मुद्रा वाला हाथ भी ज्ञान-निष्ठ स्थिति की परा-काष्ठा का प्रतीक है। (क्रमशः)

जितना गुड़ डालोगे, उतना मीठा होगा

ले. ब्रह्माकुमारी चक्रधारी, दिल्ली

प्यारे बच्चो यह कहावत तो आपने अपने बड़े-बुजुर्गों से कई बार सुनी होगी कि जितना गुड़ डालोगे, उतना मीठा होगा और यह है भी शत प्रतिशत सत्य। इसी पर घटती मैं आपको एक छोटी सी कहानी सुनाती हूँ।

कहते हैं कि एक बार एक राजा एक व्यक्ति के काम से बहुत खुश हुआ। उसने उस व्यक्ति को अपने पास बुलाकर कहा कि तेरी मेहनत, वफादारी व हिम्मत से मैं बहुत प्रसन्न हूँ, इसलिए मैं आज तुझे कुछ इनाम देना चाहता हूँ। फिर उसने कहा कि काम तो चाहे तुमने लगभग 500 रूपये जितना किया है पर मैं तुम्हें कुछ इससे अधिक देना चाहता हूँ। वह व्यक्ति बहुत खुश हो रहा था।

राजा ने उससे कहा, "आज की रात तुम मेरे व्यक्तिगत कमरे में ही गुज़ारना। वहां सब प्रकार का कीमती सामान है, तुम्हें जो चाहिए, वह उसमें से ले लेना परन्तु सुबह 7.00 बजे कमरा खाली कर देना।" उस व्यक्ति की तो खुशी का ठिकाना न रहा। वह अपने भाग्य को सराहने लगा और सोचने लगा कि सचमुच, भगवान जब देता है तो छप्पर फाड़कर ही देता है।

रात के ठीक 9.00 बजे उसने राजा के कमरे में प्रवेश किया। अनेक प्रकार की आलीशान वस्तुओं, कीमती सामान को देख कर उसकी आँखें चमक उठीं। वह एक-एक चीज़ को बड़े ध्यान से देखता और मन में सोच लेता कि वह यह चीज़ भी अपने साथ ले जाएगा, दूसरी चीज़ भी ले जाएगा और इस प्रकार उसने कई वस्तुओं को अपने साथ ले जाने की योजना बना ली। और फिर मन-ही-मन मुस्कराते हुए सामने बिछे हुए नरम-नरम गद्दों वाले बिस्तर की ओर चल दिया। उसने सोचा कि सारा दिन बहुत काम करके वह थक गया है तो क्यों न कुछ देर सुस्ता ही लिया जाए (और फिर ऐसा नरम-नरम बिस्तर उसे और कहाँ मिलना था) और उसके बाद वह यह सब सामान इकट्ठा कर लेगा और सुबह होते ही सामान सहित कमरे से बाहर आ जाएगा।

यह सोचकर वह उस पलंग पर जाकर चैन से लेट गया। थका हुआ तो था ही, कुछ ही क्षणों में उसे निद्रा देवी ने घेर लिया। वह सोया रहा, सोया रहा और इतना सोया रहा कि सुबह के 7.00 बज गए। उसी वक्त राजा के नौकर ने आकर दरवाजा खटखटाया। वह व्यक्ति आंखें मलता हुआ हड़बड़ा कर उठ बैठा। उसने जल्दी से बिस्तर से उठ कर दरवाज़ा खोला।

नौकर ने कहा– "बाहर चलो, समय पूरा हो गया है।"

उस व्यक्ति ने घबरा कर घड़ी की ओर देखा और कमरे से बाहर निकलते वक्त एक टेबल लैम्प को ही खींचता हुआ ले गया। पूछने पर मालूम हुआ कि उस लैम्प की कीमत कुल 500 रूपये ही है। जितना उस व्यक्ति ने काम किया था, उसको उतनी ही प्राप्ति भी हो गई।

तो देखो बच्चो, सारा कमरा, वह कीमती सामान, आलीशान वस्तुएँ उस व्यक्ति के सामने थीं, वह उसमें से जितना चाहता उतना ले सकता था परन्तु तकदीर के बिना मनुष्य को कुछ भी प्राप्त नहीं होता। चाहे उसमें निमित्त कारण विघ्न रूप कुछ भी हो जैसे इस कहानी में उस व्यक्ति की नींद। परन्तु याद रखना तकदीर भी अपने ही कर्मों से बनती है। श्रेष्ठ कर्म करने वाले की श्रेष्ठ तकदीर बनती है और निकृष्ट कर्म अथवा खोटे कर्म करने वाले की खोटी तकदीर। जैसे उस व्यक्ति ने 500 रूपये का काम किया था और 500 रूपये की ही उसको चीज़ मिल गई। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि अपने कर्मों पर ध्यान दे।

अब परमपिता परमात्मा, प्यारे शिव बाबा ने भी हमें सुख शान्ति के कमरे में लाकर खड़ा कर दिया है

और कहा है कि "बच्चे, जितना चाहिए, उसमें से ले सकते हो।" बाबा के भण्डारे तो भरपूर है, वह तो दाता है परन्तु आत्मा उस में से यथा योग शक्ति ही सुख-शान्ति का खजाना प्राप्त करती है। क्योंकि बाबा ने बताया है कि पवित्रता ही सुख शान्ति की जननी है। और 'पवित्रता' का अर्थ केवल ब्रह्मचर्य व्रत का पालन नहीं अपितु वर्तमान कर्मों की श्रेष्ठता और पिछले विकर्मों का पूर्ण विनाश ही पवित्रता है। अतः जितना-जितना आत्मा पवित्र होती जाएगी उतना-उतना वह सुख शान्ति के खजाने का आनन्द लेती रहेगी। बाबा का बनते ही हमने ब्रह्माचर्य व्रत का तो पालन कर ही लिया और आजीवन करते ही रहेंगे। परन्तु पूर्ण पवित्र बनने के लिए हमें अपनी दिनचर्या पर ध्यान देना होगा कि कितना समय हम योगी जीवन व्यतीत करते हैं और कितना समय वियोगी। अगर अमृत वेले उठकर योगाभ्यास नहीं करते, दिनचर्या पर भी कोई विशेष ध्यान नहीं है तो सारे जीवन में भी हम उस अतिन्द्रिय सुख का अनुभव नहीं कर सकते। योग ही तो एकमात्र साधन है जिससे जन्म-जन्मान्तर के विकर्म भी दग्ध होते हैं और आगे के लिए श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति भी प्राप्त होती है। अतः जितना वर्तमान समय हम यह पुरूषार्थ करेंगे तो अभी भी और भविष्य में आने वाली दुनिया में भी हम अतुल, अटल, अखण्ड, निर्विघ्न राज्य भाग्य के अधिकारी हो सकेंगे। □

दुर्ग सेवा केन्द्र पर विधि 'न्याय में आध्यात्मिकता' पर वकीलों के समक्ष कार्यक्रम में बार एसोसिएशन के अध्यक्ष भ्राता आर. एल. पारख मुख्य अतिथि, ब्र० कु० कमला बहिन अध्यक्षा और प्रमुख वक्ता ब्र० कु० उषा बहिन मंच पर बैठे हैं।

पुरी– कलकत्ता– देहली पद यात्रा के धनबाद पहुंचने पर ब्र० कु० सुषमा तथा देवी जी स्वागत करते हुए

कन्याकुमारी– देहली पदयात्रा के हैदराबाद पहुंचने पर आन्ध्र प्र० के मन्त्री भ्राता कलावेकन्ट राव तथा ब्र० कु० कुलदीप स्वागत करते हुए

सोमनाथ से निकली पदयात्रा प्रकृति के सुहावने दृश्यों के मध्य।

भारत एकता युवा पद यात्रा

(विशेष पदयात्रा करने वाले युवा भाई-बहनों के प्रति मधुर सन्देश)

ब्र० कु० सूरज प्रकाश, सहारनपुर

गाँव-गाँव और नगर-नगर में शिव सन्देश सुनाना है।
रुकना न कहीं, झुकना न कहीं, आगे ही बढ़ते जाना है।।

पूरे भारत में पद यात्रा की लहर चली है भारी
उत्तर-अमृतसर, पश्चिम-सोमनाथ, दक्षिण में कन्याकुमारी
बोम्बे, कलकत्ता, पुरी, बद्रीनाथ, आबू ने हिम्मत न हारी
बेलगांव ने साईकिल पर चलने की, की तैयारी
मंजिल सब की एक है 'दिल्ली', सबका एक निशाना है
रुकना न कहीं, झुकना न कहीं, आगे ही बढ़ते जाना है

पदयात्रा का दौर चला तो लगी गूँजने चहूँ दिशायें
उमंग-उत्साह सभी में जागा, सबके मन है हर्षाये
बाल, वृद्ध, युवा पीढ़ी, क्या भाई माताएं-कन्याएं
सबके मन की एक आशा है जल्दी शुभ दिन वो आए
बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा, जग में अब फहराना है
रुकना न कहीं झुकना न कहीं आगे ही बढ़ते जाना है

कुरीतियाँ और कुप्रथाएँ जग से हमें मिटानी हैं
बीडी, सिगरेट, शराब, तम्बाकू की आदत छुड़वानी है
मूर्छित हुई आत्माओं पर ज्ञान-सुधा बरसानी है
प्रभू-प्रेम की संजीवनी बूटी जन-जन को सुंघानी है
कोई माने या न माने, अपना फर्ज निभाना है
रुकना न कहीं, झुकना न कहीं आगे ही बढ़ते जाना है

पदयात्रा में पग-पग पर आती नित बाधाएँ हैं
किन्तु महावीरों के कदम कभी न डगमगाए हैं
पूर्ण करती हैं जो तुमसे रखी सबने आशाएँ हैं
संग तुम्हारे सर्व ब्राह्मण कुल की शुभ कामनाएँ हैं
कर न सका जो कोई अब तक वह करके तुम्हें दिखाना है
रूकना न कहीं, झुकना न कहीं, आगे ही बढ़ते जाना है

हे नवयुवको, कदम जो तुमने जन सेवार्थ उठाये हैं
उस हर एक कदम-कदम में देखो पदम समाये हैं
रूकें न कभी, कदम चल पड़े जो दिल्ली दरबार को
वहाँ पहुंचकर तुम्हें जगाना, सोयी भारत सरकार को
कर युवा महोत्सव, युवा रैली ज़ोर से शंख बजाना है
रुकना न कहीं झुकना न कहीं आगे ही बढ़ते जाना है

दिल कहे बाबा तेरा शुक्रिया

ले० ब्र० कु० सुधा, शक्ति नगर, दिल्ली

भक्ति मार्ग में जिन भक्तों को भगवान से अति स्नेह होता है वे भी कदम-कदम पर उसका शुक्रिया अदा करते हुए कहते हैं—"प्रभू, तेरा शुक्र है।" हम शिव बाबा के बच्चे भी प्रतिदिन यह गीत गाते अथवा सुनते हैं कि "दिल कहे बाबा तेरा शुक्रिया···" परन्तु प्रश्न उठता है क्यों ? क्यों हम मन से, तहे दिल से बाबा का कोटि-कोटि बार, नहीं-नहीं, असंख्य बार शुक्रिया अदा करते हैं ? ऐसा क्या किया है बाबा ने जो मन गा उठता है—

पाके तुझको बाबा सुख का सार पा लिया
पाने का न कुछ रहा जब तुझको पा लिया···

तत्क्षण मन कह उठता है कि क्या नहीं किया उस प्यारे बाबा ने। जो दुनिया का कोई प्राणी नहीं कर सकता, वह बाबा ने किया। आइये, तो ज़रा विचार करें कि बाबा ने क्या-क्या किया।

१. गिरों को उठाया—जैसे कोई व्यक्ति गढ्ढे में गिर जाता है अथवा दलदल में फंस जाता है, उसे अगर कोई बाहर निकाल दे तो वह उसका सारी उम्र शुक्र गुज़ार होता है। इसी प्रकार जो पतित बन चुके थे, माया की विषय-विकारों की दलदल में फंसे हुए थे, निकलना चाहते भी नहीं निकल पाते थे, उन्हें बाबा ने गन्दगी में से निकालकर फूलों के बगीचे में बिठा दिया, अर्थात पतितों को पावन बना दिया। जिस कार्य को साधु सन्तों, ऋषियों-मुनियों ने असंभव समझा कि घर-गृहस्थ में रहते हुए जीवन को पवित्र बनाना संभव ही नहीं, उसे बाबा ने आत्मिक ज्ञान देकर कितना सहज सम्भव कर दिया। जिनका अति साधारण जीवन था, उनमें ज्ञान व गुणों का रस भरकर कितना महान बना दिया कि आज दुनिया की दृष्टि ही उनके प्रति बदल गई। जीवन का मूल्य बढ़ गया क्योंकि आत्मा पवित्र बन गई।

सिर्फ इतना ही नहीं, जिन माताओं-बहनों को समाज़ एक नीची निगाह से देखता था; अबला, कमज़ोर, नर्क का द्वार, द्वितीय श्रेणी का नागरिक (Second Class Citizen) आदि शब्दों से सम्बोधित करता था, उन्हें बाबा ने कहा कि तुम शिव शक्तियाँ हो, दुर्गा हो, काली हो, वैष्णो हो, नर्क का द्वार नहीं, स्वर्ग का द्वार हो। अबला को सबला बना दिया, पाँव से चोटी पर ला दिया तो ऐसे बाबा का क्यों न शुक्रिया अदा करें।

२. गिरों को गले लगाया—दुनिया में कोई नीच होता है, अथवा गिरा हुआ (कर्मों से) होता है तो उससे लोग नफ़रत करते हैं, कोई भी उसके साथ खड़ा होना भी पसन्द नहीं करता। अगर नफ़रत नहीं तो अधिक से अधिक उसके प्रति अपनी सहानुभूति (Sympathy) व्यक्त करते हैं कि 'बेचारा'। परन्तु बाबा ने उन पतित, विषयी, विकारी, कामी, क्रोधी आत्माओं से नफ़रत नहीं की, सिर्फ सहानुभूति भी नहीं प्रगट की परन्तु उन्हें उनके आदि-अनादि स्वरूप की स्मृति दिलाते हुए कहा कि तुम तो पवित्र आत्माएँ हो, पूज्यनीय हो, अति श्रेष्ठ हो, अपने को पहचानो। ऐसे गिरों हुओं को बाबा ने अपने गले लगा लिया और कहा—"तुम तो मेरी सन्तान हो', 'चरणों की धूल नहीं बल्कि सिर के ताज हो', 'नैनों के नूर हो', 'धरती के सितारे हो', 'दिल तख्त नशीन हो' और प्यारे बाबा के ये मधुर बोल सुनते ही जीवन बदल गया, मन की कली खिल उठी, मन झूम-झूम कर गाने लगा—

किसी ने अपना बनाके मुझको
मुस्कराना सिखा दिया
अन्धेरे घर में किसी ने
हंस के चिराग जैसे जला दिया

गिरने से बचा लिया— बाबा ने केवल पतितों

को पावन ही नहीं किया परन्तु बाबा ने अनेक आत्माओं को पतित होने से बचा लिया। बाबा की पहचान अगर हमें न मिलती तो हम भी दुनिया की रस्म की तरह अपना जीवन जीते और पतित बन जाते और फिर मन्दिर में जाकर गा आते—विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। कर्मेन्द्रियों ज्ञानेन्द्रियों के वशीभूत होकर न जाने क्या-क्या विकर्म करते रहते परन्तु बाबा ने हमें अनेक विकर्मों से बचा लिया। ऐसे बाबा का अवश्य ही मन से शुक्रिया निकलता कि प्यारे बाबा, सचमुच तुमने हमें दुःख अशान्ति के मूल कारणों से मुक्त कर दिया।

४. भटकने से छुड़ा लिया—भक्ति मार्ग में भगवान को पाने के लिए कितना दर-दर भटक रहे थे। कभी काशी, कभी मथुरा, कभी अमरनाथ तो कभी बद्रीनाथ परन्तु चारों तरफ लगाए फेरे, फिर भी हरदम दूर रहे, भगवान न मिला। लोग कहते थे कि जंगल में जाकर गुफाओं, कुटियाओं में तपस्या करने से ही भगवान की प्राप्ति होगी। कोई कहता कि भक्ति पूजा, पाठ, व्रत, नियम करते जाओ, कभी-न-कभी भगवान मिल ही जाएगा। परन्तु सब तरफ़ से निराशा ही हाथ लगी। अब बाबा ने स्वयं आकर अपना परिचय, आत्मा का परिचय, आत्मा के धाम का परिचय देकर बुद्धि को ठिकाना दे दिया। भटकना छूट गया। कभी सोचा भी न था कि भगवान मिलेगा, हमें बैठ कर पढ़ायेगा, हमारी पालना करेगा—जो स्वप्न में भी न था, वह साकार हो गया। न जंगलों में जाना पड़ा, न गुफाओं में रहना पड़ा परन्तु घर बैठे ही वह हमें मिल गया तो सब भटकन ख़त्म हो गई, मंज़िल मिल गई। किसी भटकते हुए राही को उसकी मंज़िल का पता कोई बता दे तो कितना कृत्कृत्य होता है। बाबा ने हमें केवल मंज़िल का पता ही नहीं दिया अपितु गाइड बनकर वह हमें अपने साथ ले चलता है।

५. हमें देखते ही बाबा ने हम पर विश्वास कर लिया और हमारे सिर पर विश्व परिवर्तन की जिम्मेवारी रख दी। लौकिक माँ-बाप भी कई बार अपने बच्चों पर इतनी जल्दी विश्वास नहीं करते कि ये बच्चे कुछ कार्य ठीक से कर पायेंगे या नहीं। परन्तु बाबा ने अपना बनाते ही हमारे कन्धों पर जिम्मेवारी रख दी और कहा कि तुम इस विश्व के आधार मूर्त हो, उद्धार मूर्त हो, विश्व परिवर्तन की नींव हो, सतयुगी विश्व के गेट्स तुम्हें ही खोलने हैं, इस संसार को रावण की कैद से तुम्हें ही मुक्त कराना है, सच्ची स्वतन्त्रता दिलानी है—ऐसे उमंग भरे महावाक्य उच्चारित कर बाबा ने हम बच्चों में एक अदम्य उत्साह भर दिया, एक नया जोश भर दिया जिससे सभी स्वपरिवर्तन के कार्य में तेजी से जुट गए क्योंकि बाबा ने नारा दिया कि स्वपरिवर्तन ही विश्व-परिवर्तन को लाएगा (Self transformation will bring world transformation)

कितना कहें, बाबा ने कदम-कदम पर श्रीमत देकर सुकर्मों की पूँजी जमा करने का पाठ पढ़ाया। जो माँगते रहते थे, उन्हें माँगने से छुड़ा दिया, भिखारी से अधिकारी बना दिया; मोहताज से सिरताज बना दिया, मंगता से दाता बना दिया, पुजारी से पूज्य बना दिया, विकारी से निर्विकारी बना दिया, शूद्र से ब्राह्मण चोटी बना दिया, बन्दर (समान) से मन्दिर लायक बना दिया, पदमापदम भाग्यशाली बना दिया तो बताइये शुक्रिया अदा करें या नहीं उस प्यारे बाबा का! आइये, सब मिलकर गायें—

दिल कहे बाबा तेरा शुक्रिया
तूने ही भाग्य बनाया है
पल-पल तेरे गुण गाऊँ मैं बाबा
हर पल तेरे गुण गाऊँ मैं

ईमानदारी से ही सर्व की उन्नति सम्भव

ब्र० कु० ओमप्रकाश मसुरहा, बाँदा

एक बार की बात है बांदा नगर में ४०-५० की संख्या में जाने माने नागरिक एकत्रित थे और उत्तर प्रदेश सरकार के माननीय गृह मंत्री महोदय के आगमन की प्रतीक्षा करते हुये, बातें कर रहे थे। वार्ता का विषय था, "जीवन में उन्नति।" वहां उपस्थित जन समुदाय व प्रमुख लोग बारी-बारी से इस विषय में अपने-अपने विचार प्रकट कर रहे थे। उदाहरण दे रहे थे, जिले के कुछ दूसरे (वहाँ अनुपस्थित) प्रमुख व्यक्तियों के बारे में, जिन्होंने पिछले दशक में जिले के व्यापारिक प्रतिष्ठानों के मध्य स्पर्धा कर आर्थिक उन्नति का प्रतिमान बनाया था। और यह संवाद कर रहे थे कि उन्होंने जो भी उन्नति आज की है, वह बेईमानी से की है न कि ईमानदारी से। सभी उपस्थित समुदाय के लोग एक मत से एक दूसरे का समर्थन कर रहे थे व उन व्यक्तियों की बुराईयों की चर्चा कर रहे थे, पर-चिन्तन में व्यस्त थे और घूम-फिरकर वही आ जाते थे कि अमुक-अमुक व्यापारी ने ये ये बेईमानी की और खूब धन अर्जित किया है और खूब उन्नति की है। मानो वे सब यही सिद्ध कर रहे थे कि बेईमानी से ही उन्नति होती है।

उस समुदाय में मैं भी उपस्थित था और पिछले २०-२५ मिनटों से चल रही चर्चा को बहुत ध्यान-पूर्वक सुनते हुये उन सब की बातों का चिन्तन कर रहा था। हमें उनकी बातें बड़ी अटपटी, बिन सोचे समझे कही जाने वाली व झूठ लग रही थीं। क्योंकि मैंने अपने विगत जीवन काल में यह अनुभव किया था कि जो मैंने जीवन में पाया है वह बहुत ही पुरुषार्थ, मेहनत व ईमानदारी से पाया है। बेईमानी ने तो अन्ततः मार्ग में रोड़े ही अटकाये हैं। मुझे यह भी लग रहा था कि नगर के प्रतिष्ठा प्राप्त गणमान्य जन किस प्रकार से एक गलत सिद्धान्त का सार्वजनिक प्रतिपादन कर रहे हैं। पहले तो मैं चुप्पी साधे रहा, किन्तु जब और मुझसे नहीं रहा गया, तो मैंने जोर से सभी लोगों का ध्यान आकृष्ट करने के लिये लगभग चीखते हुये कहा, "आप सब गलत कहते हैं।" सभी का ध्यान मेरी ओर गया तो लोगों ने सवाल किया, "इन्जीनियर महोदय, हम क्या गलत कहते हैं।" मैंने उन सभी लोगों में बैठे सबसे प्रतिष्ठित जाने माने चतुर व्यापारी एवम् नेता, जिनसे मेरे पारिवारिक सम्बन्ध भी थे, को सम्मानजनक सम्बोधन करते हुये पूछा, "चाचा जी आप यह बतायें कि बचपन से आज तक के अपने जीवन काल में आपने उन्नति की है अथवा नहीं?" तो वे स्नेह से बोले, "बेटा! खूब।" हमने उनसे अगला सवाल किया, "अच्छा यह भी बतायें कि उस उन्नति के वास्ते आपने कितनी बेईमानी की है?" तो उन्होंने गम्भीरतापूर्वक निश्छलता से उत्तर दिया, "बिलकुल भी नहीं।"

उन्हीं के पास बैठे जिले के एक मशहूर धनाढ्य वयोवृद्ध वकील से भी मैंने वही सवाल किया, "वकील साहब, आपने भी गांव से शहर आने पर उन्नति की है न?" वे बोले, "हां बेटा खूब। देखो न मेरे पास बंगला, मोटरकार व अन्य सब सुविधायें तो हैं ही, जो मेरी उन्नति का प्रतीक हैं।" मैंने उनसे भी वही सवाल किया, "तो आपने इन्हें अर्जित करने में कितनी बेईमानी की है?" उनका सरल सा उत्तर था—"बिलकुल भी नहीं।"

उन्हीं लोगों में तत्कालीन इन्सपेक्टर कोतवाली भी विराजमान थे। हमने उनसे भी यही सवाल दुहराया, "कोतवाल साहब आप एकदम तो कोतवाल बने नहीं होंगे, पहिले तो कोई छोटा पद ग्रहण किया होगा—फिर कोतवाल बने होंगे?" उन्होंने कहा, "हां बात सही है कि मैं पहिले साधारण

सिपाही की हैसियत से उत्तर प्रदेश पुलिस में भरती हुआ था" मैंने कहा, "इसका तो यही मतलब हुआ कि आपने भी जीवन में उन्नति की है।" उन्होंने कहा, "हां वह तो सबके सामने है कि मैं इस शहर का कोतवाल हूं।" मैंने उनसे भी तपाक से यही सवाल किया, "तो आपने जीवन में कितनी बेईमानी की है?" उन्होंने अपने हृदय को टटोलते हुये कहा, "बिलकुल भी नहीं।"

मैंने जनमानस की ओर मुड़ते हुए कहा कि यही सवाल यदि मैं आप सबसे बारी-बारी से करूं तो निश्चत ही आप सबका यही उत्तर आयेगा कि आप सबने भी जो उन्नति की है वह ईमानदारी से की है न कि बेईमानी से। तो मैंने कहा कि कितने ताज्जुब की बात है आप ४०-५० लोगों के अपने-अपने व्यक्तिगत जीवन का अनुभव यही है कि आप सबने अपने जीवन में जो भी उन्नति की है वह ईमानदारी के कारण। और मजा यह है कि आप सब सार्वजनिक रूप से दूसरों के बारे में यह धारणा कर और करा रहे हैं कि जिले के अमुक अमुक व्यक्तियों ने जो धनार्जन किया है व बड़े आदमी बने हैं यानी आर्थिक उन्नति की सीढ़ी चढ़े हैं तो वह बेईमानी के कारण। यानी परोक्ष रूप में हम सब तो यही पढ़पढ़ा रहे हैं कि भाइयो उन्नति करनी है तो खूब बेईमानी करो।

सभी उपस्थित जनों को सम्बोधित करते हुये मैंने कहा, आइये खुले दिल-दिमाग से हम सब विचार करें, कहीं हमारा चिन्तन दोषपूर्ण तो नहीं है? मैंने सभी उपस्थित जनों को समझाते हुये कहा, "मनुष्य जीवन—यह एक खड़े पैमाने की तरह है जिसे सौ भागों में विभक्त किया गया है। समझो मनुष्य जीवन इसी पैमाने के अन्दर है। शून्य से जो पहले है वह अजन्मा है और जो सौ से ऊपर है, वह भगवान है। और इसके बीच में शरीर-धारी इंसान है। तो जो यह पैमाना है समझो—अच्छाइयों व बुराइयों यानी सत्य व असत्य, सही व गलत या ईमानदारी व बेईमानी के मिश्रण से निर्मित है। यह भी निर्विवाद रूप से सत्य है कि आज कलियुग के समय ऐसा कोई मनुष्य नहीं मिल सकता जिसमें कोई न कोई बुराई न हो और ऐसा भी मनुष्य नहीं मिलेगा जिसमें कोई न कोई अच्छाई न हो।

अब यह विचार करें कि किसी व्यक्ति ने जीवन में यदि पचपन प्रतिशत उन्नति कर ली तो इससे यों समझिये कि उसमें पचपन प्रतिशत अच्छाइयाँ हैं व बाकी पैंतालिस प्रतिशत बुराइयाँ भी हैं। यानि कि पचपन प्रतिशत ईमानदारी है व पैंतालिस प्रतिशत बेईमानी भी है। तो समझने की बात है कि उसका जीवन पचपन प्रतिशत अच्छाइयों व पैंतालिस प्रतिशत बुराइयों के निर्मित प्रयास, संस्कार एवम् अनुभवों से बना है। इससे तो यही सिद्ध हुआ न कि उसने जीवन में जो भी उन्नति की है वह पचपन प्रतिशत अच्छाइयों के संस्कारों के कारण ही, न कि पैंतालिस प्रतिशत बुराइयों के संस्कारों के कारण। सत्य तो यह है कि पैंतालिस प्रतिशत बुराइयों ने तो उसे शत-प्रतिशत अच्छा बनने से रोका है। उसकी और अधिक उन्नति में बाधा पहुंचाई है। जीवन को पूर्णता तक पहुंचाने में अंकुश लगाने का कार्य किया है।

सवाल उठता है कि फिर हमारे चिंतन में भूल कहाँ हो गयी है। निश्चित है भूल तो यों हो गयी कि हमने उस पैमाने को ही उलट दिया और मान यह लिया कि उनकी जो उन्नति हुई है वह उनके अन्दर की पैंतालिस प्रतिशत बुराइयों के संस्कारों के कारण न कि पचपन प्रतिशत अच्छाइयों के कारण, जब कि सभी के व्यक्तिगत जीवन का अनुभव यही है कि उन्होंने जो भी उन्नति की है वह ईमानदारी व मेहनत के कारण ही। तो फिर जब हम दूसरों के बारे में विचार करते हैं तो इस सिद्धान्त को क्यों भुला देते हैं और मान लेते हैं कि अमुक ने जो उन्नति की है वह बेईमानी के कारण। इसका एक कारण और भी है वह है माया के वशीभूत हो दूसरों की उन्नति देख ईर्ष्या करने की दुष्प्रवृत्ति और अपने अहंकार के कारण कि मैं उससे अधिक बुद्धिमान हूँ, उसे बेईमान सिद्ध करने

की बुरी आदत। तो आइये हम विचार करें, क्या यह वास्तविकता नहीं है कि प्रत्येक मानव के जीवन में जितने प्रतिशत ईमानदारी है, पवित्रता है, वह व्यक्ति उतनी ही उन्नति कर सकता है। बुराइयाँ तो उसे उन्नति के मार्ग में आगे बढ़ने से रोकती हैं। यदि मनुष्य अपने अन्दर से सारी बुराइयों के संस्कार निकाल दे तो वह भगवान के समान देवी देवता वन सकता है।

आज के मानव के इस दोषपूर्ण चिन्तन ने कि जो भी मनुष्य आज उन्नति कर रहा है वह बेईमानी से कर रहा है समाज का बेड़ा गर्क कर दिया है। इस चिन्तन ने उसे बेईमानी करने, अनाचार करने, भ्रष्टाचार बढ़ाने, दुराचार करने की खुली छूट दे दी है। पतित से और पतित बनने का मार्ग प्रशस्त किया है और दूसरों के गुणों के स्थान पर दुर्गुणों को ही देखने के आदी होते जा रहे हैं, हम मनुष्य। इस पथभ्रष्ट चिन्तन ने मनुष्य के अन्दर भयंकर असन्तोष, घृणा व बैर विरोध को जन्म दे दिया है। गलत मान्यताओं द्वारा वह अपने सबसे प्रमुख दुश्मनों काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार व आलस्य की गिरफ्त में फंस गया है। वह अब इसी गलत चिन्तन को हृदयंगम कर उन्नति के पथ पर आगे बढ़ता है तो अल्पकाल तो सफलता दिखाई देती है किन्तु आगे चलकर वह असफलता का ही सामना करता है और दुःखी हो जाता है। आज मनुष्य दोहरे मानदण्डों पर आधारित जीवन जी रहा है। अपने लिये वह दूसरी मान्यतायें रखना चाहता है और दूसरों के साथ व्यवहार करते समय दूसरी मान्यताओं का प्रयोग करता है और यही कारण है कि वह आगे चलकर इन्हीं दो पाटों के बीच पिसता रहता है, दुःखी व अशान्त रहता है।

यदि हम वास्तव में सुखी, शान्त व समृद्ध मानव समाज चाहते हैं तो हमें अपने इस दोषपूर्ण चिन्तन को प्राण प्यारे परमपिता शिव परमात्मा द्वारा ब्रह्मातन से उच्चारित मतानुसार सही करना होगा। दोहरे मानदण्डों का जीवन छोड़ हृदय में पवित्रता व निर्मलता धारण कर ईमानदारी का जीवन जीना होगा। तभी सर्व का कल्याण होगा। और तभी इस सत्य अवधारण की समझ सबको प्राप्त होगी, कि ईमानदारी से ही सर्व की उन्नति सम्भव है, न कि बेईमानी से। बेईमानी तो सारे समाज को विषाक्त कर अन्ततः उसके करने वाले की भी लुटिया डुबो देती है। निश्चित है कि आज के युवा कल राष्ट्र व विश्व के कर्णधार बनेंगे। संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा यह वर्ष युवा वर्ष घोषित किया गया है। ऐसे समय बिना इस सोच में समय गवाये कि "बिल्ली के गले में घंटी कौन बाँधे" हम सब युवकों को प्रतिज्ञा कर लेनी चाहिये कि हम स्वयं पहिले ईमानदारी का जीवन जियेंगे और अपने आदर्श जीवन द्वारा दूसरों में बल भरेंगे कि सभी चरित्रवान बनें, नैतिकता व ईमानदारी को अपने जीवन का आधार बनायें और जुट जायें एक नवीन सतयुगी संसार के निर्माण में, जिसके लिये आज प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय कटिबद्ध है।

युवा यात्रा का यह नारा—विश्व एकता लक्ष्य हमारा
युवा यात्रा का पैगाम—नवभारत का हो निर्माण
तोड़ फोड़ को छोड़ दे युवा—टूटे दिलों को जोड़ दे युवा।
शिव पिता का यही पैगाम—युवा करो तुम विश्व कल्याण
युवा भारत की है शान, युवा जागे तो देश महान
सारे जग की यही पुकार—युवा है कल का आधार

एकांकी

राजयोग का सुखद पथ

ब्र० कु० मुन्नी, जामनगर

पात्र—नरेश चन्द्र युगल
रमीला देवी आयु ४० वर्ष
नरेन्द्र नरेश का मित्र

नरेश—रमीला, तुम सदा ही बिज़ी रहती हो, चलो इस बार दिवाली की छुट्टी कहीं पहाड़ी पर बिता आयें।

रमीला—(रूखेपन से) तुम्हें घूमने की ही पड़ी रहती है। न राम, न रहीम। घर के पास में ही मन्दिर···तो भी कभी दर्शन नहीं करते···

नरेश—(सहज भाव से) अरे देवी, यह तो सब आपका ही काम है। आखिर आपके पुण्यों का आधा हिस्सा तो मेरा भी है।···

रमीला—बस बातें बनानी आती हैं···कहतो हूँ कुछ पूजा पाठ कर लो तो सुनते ही नहीं···

नरेश—देवी जी, सच बताऊँ, मुझ इन सब में विश्वास नहीं है। मैं तो तर्क में विश्वास करता हूँ। देखो हमारे मित्र नरेन्द्र कई बार कह चुके हैं कि हमारे आश्रम पर चलो, परन्तु मैं···

रमीला—(थोड़ी उत्तेजना से) तुम्हें विश्वास कैसे कराऊँ···क्या सारी दुनिया बेसमझ है क्या···यदि चलना ही है तो ऋषीकेष, हरिद्वार चलो···

नरेश—वहाँ तो हम सब देख ही आये···तुम कहो तो माउन्ट आबू चलें। मित्र नरेन्द्र का भी उलाहना पूरा हो जायेगा। इन ब्रह्माकुमारियों की बड़ी ही महिमा सुनी है। और तुम्हें भक्ति का भी मौका मिल जायेगा।

रमीला—आपकी यही इच्छा है तो चलो···

नरेश—तो तयारी करो; मैं नरेन्द्र बाबू से मिल आता हूँ···

नरेश का नरेन्द्र के घर जाना

नरेन्द्र अकेले अपने कमरे में बैठे हैं। चारो ओर ईश्वरीय ज्ञान के चित्र लगे हैं। लाल प्रकाश है व गीत बज रहा है···नरेश यह देखकर क्षण भर रुक जाता है···

नरेन्द्र—(नरेश को देखकर)···आइये नरेश जी, आइये···बैठिये···आज कैसे दर्शन दिये?

नरेश—विचार आया कि इस बार छुट्टी में माउन्ट आबू चलें। आपका आश्रम भी देख लें।

नरेन्द्र—अवश्य···बहुत खुशी की बात है···लगता है आपके जीवन के स्वर्ण क्षण आ पहुँचे···आप वहाँ ३ दिन का योग-शिविर भी कर लें।

नरेश—देखो भाई···मुझे योग-वोग में तो रुची है नहीं, हाँ रमीला कर लेगी···

नरेन्द्र—अरे बन्धु···यह योग अति सुखकारक, दुख निवारक है। इससे आपका मनोबल बढ़ेगा, आत्मविश्वास जागृत होगा, भय नष्ट हो जायेगा और तनाव से सदा के लिए मुक्ति हो जायेगी।

नरेश—ठीक है तो देख लेंगे।

तीनों का माउण्ट आबू ब्रह्माकुमारी आश्रम में जाना

आश्रम के बाहर सड़क पर ही···

नरेश—(सामान रखते हुए) ठहरो मुझे देखने दो···"ओम शान्ति भवन" आह···किसने बनाया है इसे···मेरा तो मन खिल उठा···मन चाहता है देखता ही रहूँ···देखता ही रहूँ···

नरेन्द्र—यह विश्व-सृष्टा की एक छोटी सी रचना है···चलो सामान रख दें फिर सब कुछ देखेंगे।

पाण्डव भवन में प्रवेश

रमीला—मन शान्त हो गया यहाँ तो···ये स्वर्ग है···या परियों का लोक···

नरेन्द्र—रमीला बहन···आप परमात्मा की कर्म-भूमि पर आ गई हैं···अब आप यहाँ परमात्मा के

दिव्य कर्मों का अवलोकन करेंगे। इसे ही हम "मधुबन" कहते हैं।

एक ब्रह्माकुमारी का आना

आइये···बहुत अच्छा···शिव बाबा की इस चेतन फुलवारी में आपका हार्दिक स्वागत है। नरेन्द्र भाई, आप सभी योग-भवन में जायें। वहीं आपके ठहरने की व्यवस्था है।

तीनों का योग-भवन में प्रवेश

नरेश—अद्भुत शान्ति है···हमने बहुत देर की नरेन्द्र बाबू···हमें यहाँ बहुत पहले ही आ जाना चाहिए था।

रमीला—और लगता है, भगवान ने मुझे तो मेरी भक्ति का पुण्य-फल दे दिया।

शाम ६-०० बजे···योग कक्ष···ब्रह्मा कुमारी बहन स्टेज पर···सभी योग शिविर में आये हुए भाई-बहनों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। इस ३ दिन के योग शिविर में आप पूर्णतया अन्तर्मुखी रहें। जो कुछ सुनाया जाए उसका चिन्तन करें और आत्मा व परमात्मा की अनुभूति करें।

संक्षेप में—राजयोग अर्थात् आत्मा का परमात्मा से मिलन अर्थात् स्वयं का सम्बन्ध अपने परमपिता से जोड़ना। यह योग अति सरल है, इसलिए इसे सहज योग कहते हैं इसका अभ्यास बुद्धि से किया जाता है, इसलिए इसे बुद्धियोग कहते हैं। इससे स्वर्ग का राज्य-भाग्य प्राप्त होता है तथा मनुष्य कर्मेन्द्रियों का राजा बन जाता है इसलिए इसे राजयोग कहते हैं।

नरेश—लगता है हमारी जन्म जन्म की प्यास बुझ जायेगी।

रमीला—मेरा तो मन गद्गद् हो रहा है···लगता है स्वग में आ गई हूँ···

दूसरा दिन

नरेन्द्र—चलो सभी को मधुबन देखना है···मधुबन इस ई० वि० वि० का मुख्यालय है। हमारे देश विदेश में १४०० सेवाकेन्द्र हैं। यह संस्था मानव को चरित्र उत्थान का श्रेष्ठ पथ दिखा रही है··· यह है विश्व को शान्ति का सन्देश देता हुआ शान्ति स्तम्भ। शान्ति स्तम्भ पिताश्री के सम्पूर्ण होने पर उनकी स्मृति में १९६९ में बनाया गया था।

ये है बाबा का कमरा···यहीं बाबा ने कई वर्ष तपस्या की। यहाँ बैठते ही मन एकाग्र हो जाता है। अनेक आत्मायें यहाँ दिव्य प्रेरणायें लेती हैं।

ये है बाबा की झोपड़ी···यहाँ बाबा एकान्तवास करते थे।

ये है छोटा क्लास रूम···

ये है मेडीटेशन हाल···और

ये भोलानाथ शिवबाबा का भण्डारा।

ये ओमशान्ति भवन···यहीं प्रतिदिन ईश्वरीय वाणी गुंजारित होती है।

प्रात १०.०० बजे···योग कक्ष···ब्रह्माकुमारी स्टेज पर

आज आप सभी को आत्मा का ज्ञान दिया जायेगा। हम कहते हैं···मेरा शरीर···मेरा हाथ···मेरी आँख···यह मेरा कहने वाला कौन इस जड़ शरीर के अन्दर चेतन सत्ता कौन···मैं ही इस देह में भ्रकुटी में स्थित एक चेतन आत्मा हूँ।

मैं आत्मा ज्योति स्वरूप हूँ···।

मेरा स्वधर्म, शान्ति व पवित्रता है···मन बुद्धि मेरी दो शक्तियाँ हैं।

परमधाम मेरा मूलवतन है। यह विश्व एक नाटक शाला है···मैं यहाँ पाट बनाने आई हूँ।

आत्मा अपने स्वधर्म को भूल कर ही अशान्त हुई है।

लाल प्रकाश

ब्रह्माकुमारी—अब स्वयं को देह से न्यारा आत्मा समझ कर बैठो और आत्मिक चिन्तन करो···

कमेन्टरी

सभी का उठना

नरेश—(रमीला से)···आहा···क्या शान्ति है, जीवन में पहली बार अनुभव की···

रमीला—और यह भी जान लिया कि शान्ति तो हमारा स्वधर्म है···

नरेश—आत्मा का ज्ञान कितना तकयुक्त था··· आहा हम हैं क्या और समझ क्या रहे हैं।

नरेश—मेरी तो यहाँ दृष्टि ही बदल गई···

दूसरा दिन

सूर्योदय···योग कक्ष···ब्रह्माकुमारी स्टेज पर

आज आप सभी को परमात्मा का ज्ञान दिया जायेगा

परमात्मा परम आत्मा हैं अर्थात् सभी आत्माओं में श्रेष्ठ हैं

उनका नाम शिव है।

आत्मा की तरह ही उनका स्वरूप भी ज्योति स्वरूप है।

परमात्मा भी सूर्य, चाँद, तारों के पार स्थित परमधाम के वासी हैं···

वे पुरुषोत्तम संगमयुग पर प्रजापिता ब्रह्मा के तन में इस धरा पर आते हैं···

वे ज्ञान के सागर, प्रेम के सागर···सर्व शक्तिवान हैं···

वे हम आत्माओं के परमपिता, परमशिक्षक व सद्गुरु हैं···

लाल प्रकाश

ब्रह्माकुमारी—अब सभी ईश्वरीय चिन्तन में बैठें और परमात्म अनुभूति करें···कमेन्ट्री···

सभी का प्रस्थान।

नरेश—जीवन सफल हो गया रमीला···

रमीला—मेरी खोज समाप्त हो गई···मैंने प्रभु को जान लिया···

नरेश—पता लगा कि हमारा परमपिता शान्ति का सागर है···

रमीला—मुझ सुन्दर अनुभव हुआ···मुझे लगा कि मैं यहाँ नहीं, परमधाम में परमात्मा के पास हूँ···

तीसरा दिन—सूर्योदय, वही कक्ष···ब्रह्मा कुमारी स्टेज पर···

ब्रह्माकुमारी—अब हम राजयोग की संक्षिप्त विधि सुनायेंगे···

बहुत सहज विधि है। पहले स्वयं को इस देह से न्यारी चेतन आत्मा समझें। फिर मन बुद्धि को परमधाम में परमात्मा के पास ले चलो। और अपना सम्बन्ध अपने परमपिता से जोड़ दो···।

लाल प्रकाश

कमेन्ट्री···मैं आत्मा इस देह में भृकुटी के बीच विराजमान हूँ

अब चलो इस देह व देह की दुनिया से परे···सूर्य, चाँद, तारों से भी पार सूक्ष्मवतन से भी पार···

सुनहरी प्रकाश···परमधाम···हमारे प्राण प्यारे परमात्मा शिव···ये वे प्रभु हैं, जिन्हें हम ढूँढ़ रहे थे···ये ज्ञान के, शान्ति के सागर हैं···अब इनके पास ही बैठ जाओ···।

अपने शान्ति सागर पिता से परमशान्ति अनुभव करो···

सर्वशक्तिमान परमात्मा से शक्तियाँ प्राप्त करो···

सफेद प्रकाश

इस योग द्वारा हमें प्रभु मिलन का अनुभव होता है···इस महान प्राप्ति के लिए चार नियम आवश्यक हैं—

ब्रह्मचर्य, शुद्ध अन्न, सत्संग व श्रेष्ठ आचरण

वर्तमान समय परमात्मा स्वयं आकर यह सत्य ज्ञान दे रहे हैं और उनकी आज्ञा है "बच्चे पवित्र बनो"।

इस अन्तिम जन्म में इस काम महाशत्रु को जीतो···

प्रस्थान

नरेश—क्यों न हम पवित्रता को अपना लें···?

रमीला—हाँ, इस पवित्र वातावरण ने मन शुद्ध कर दिया···हमने विषय विकारों में पूरा जीवन बिता दिया···अब प्रभु की आज्ञा स्वीकार करें···

नरेश—तो आओ हम दोनों मिलकर प्रभु के समक्ष पवित्रता का व्रत लें···

रमीला—चलो···

दोनों का बाबा के कमरे में जाकर बैठना

नरेश—(मन ही मन) बाबा मैंने आपको जान लिया, पा लिया···अब मैं आपका हूँ···आप मेरे परमपिता हो···मैं आपकी आज्ञा पर चलूँगा और आज से पवित्र रहूँगा···

रमीला—मेरे प्राणेश्वर बाबा···मैं तो आपका चेतन रूप देखना चाहती हूँ···मैंने आपकी बहुत भक्ति की···आपको बहुत ढूँढ़ा···बाबा मुझे अपना दिव्य रूप दिखाओ (रमीला गहन तपस्या में)···

अचानक कमरा दिव्य प्रकाश से भर गया और वहाँ केवल ज्योति स्वरूप परमात्मा ही दिखाई दिये···
आहा बाबा···मैं धन्य हो गई···मैं आपकी हूँ मुझे स्वीकार करो···आज से मेरा ये जीवन सम्पूर्ण पवित्र होगा···
दोनों का उठकर बाहर आना···दोनों के चेहरों पर दिव्यता झलक रही है···
नरेन्द्र—(नरेश से) चलो आपको इस संस्था की मुख्य बहनों से मिला दें···एक हैं दादी प्रकाश मणी···जो सचमुच प्रकाश पुँज हैं···जिनका जीवन परमपवित्र है···जो त्याग व तपस्या की प्रतिमूर्ति हैं···
दूसरी हैं—दादी जानकी···जो महायोगिनी हैं··· इन्होंने योग द्वारा जग को आलोकित किया है··· ये सचमुच इस धरा पर फरिश्ते हैं···

दोनों दादियाँ स्टेज पर

आप सभी ने राजयोग का सरल पथ जान लिया ? सभी ने अपने प्यारे शिव बाबा को भी जान लिया ?
अब बाबा कहते—बच्चे दिव्य गुणधारण करो व पवित्र बनो। तो सभी से आज एक दान माँगती हूँ···कम से कम एक व्यसन इस रुद्र यज्ञ में स्वाह कर दो।
प्रथम—मैं शराब छोड़ता हूँ···
दूसरा—मैं धूम्रपान त्यागता हूँ
तीसरा—मैं आज क्रोध का दान देता हूँ···
नरेश—मैं आजीवन पवित्र रहूँगा···

(सभी का ताली बजाना)

दादीजी—अब सभी बाबा की याद सौगात व टोली लेंगे···
नरेश दादी प्रकाशमणी के सम्मुख व रमीला दादी जानकी के सम्मुख
प्रकाशमणी—बहुत भाग्यशाली आत्मा हो···सदा बाबा को साथ रखना। आज बापदादा आपको पवित्रता का तिलक दे रहे हैं···
नरेश—दादी जी···मुझे तो बिछुड़ा हुआ बाप मिल गया···
जानकी—(रमीला से) कल्पपूव वाली गोपी हो। शिवबाबा ही सच्चा साजन है···उसे कभी न भूलना···
रमीला—दादीजी जी···अब तो मैं सच्ची योगिन बनूँगी···गले मिलना।

(सत्य पर आधारित)

★

युवा शक्ति

बापू बुड्ढा था,
देश की बागडोर
एक
युवा के हाथ
सौंप दी।
परन्तु
आज राजनेता
हैं बुड्ढे जरूर,
पर चाहते हैं—
घोड़ा न सही
लगाम ही अपने हाथ रहे।
कमाल है !
और
दूसरी ओर
विश्व बापू
शिव बाबा
आज
युवा शक्ति से,
योग शक्ति से,
शान्ति की शक्ति से,
इसी धरा पर
स्वर्ण युग ला रहे,
मानो, जानो,
पहचानो,
और
स्वर्णिम संसारी
बनो।

भारत की अखण्डता अमर रहेगी''

ब्र. कु. सूरज कुमार, माउण्ट आबू

युगों से बहुचर्चित महान भारत, आज पुनः महानता के पथ पर कदम रख चुका है। भारत की सम्पन्नता व इसकी महानता-दोनों ही हजारों वर्षों से विश्व को आकर्षित करती रही हैं। यहाँ अनेक राजनैतिक व धार्मिक उतार चढ़ाव आये, परन्तु इसकी एकता व अखण्डता को कोई भी नष्ट नहीं कर सका। आज जबकि सम्पूर्ण विश्व आतंकवाद का शिकार होता जा रहा है, जबकि चारों ओर आसुरी सम्पदा अपना भभका दिखा रही है, जबकि चारों ओर मानव गिरता चला जा रहा है, भारत में पुनः दिव्य प्रकाश की किरणें उभर रही हैं। यहाँ मनुष्य धीमी गति से ही सही, चरित्र व पवित्रता के महत्व को स्वीकार कर रहा है और वह दिन जल्दी ही हमारे सामने आयेगा, जबकि भारत सम्पूर्ण विश्व में सम्पन्नता व महानता में सर्वोच्च होगा। यहाँ का मानव देव तुल्य होगा और यहाँ की भाषा में अभाव शब्द ही नहीं होगा।

परन्तु उससे पूर्व एक महान क्रान्ति होगी, कल्पनातीत उथल-पुथल होगी, भयंकर संकटों के काले बादल मंडरायेंगे। परन्तु उसे देखकर हमें घबराना नहीं होगा क्योंकि वह स्वर्णिम विश्व का अभ्युदय करेगी। जैसे पवित्र बनने के लिए सोने को भी एक बार अग्नि से गुजरना होता है, वैसे ही भारत को भी स्वर्णिम बनने के लिए अवश्य ही एक बार विपदाओं की अग्नि से गुजरना होगा, परन्तु उसका अन्त अति सुखदाई होगा और पुनः यहाँ सुख-चैन की बंसी बजेगी।

तो प्रस्तुत लेख में हम भारत सम्बन्धी उन अटल व अनादि सत्यों की चर्चा करेंगे, जिनसे इतिहास कार अनभिज्ञ हैं और जिनकी प्राप्ति हमें ईश्वरीय वाणी से हुई है। आशा है पाठकगण इन रहस्यों पर विचार करेंगे व इनसे सहमत होंगे।

भारत की महिमा स्वयं भगवान् करते हैं–

यों तो भारत आदि काल से ही महिमा का पात्र रहा। जो भी विदेशी यात्री यहाँ आया, उसने इसकी भरपूर महिमा की। आज भी विश्व में भारत की बहुत महिमा है। एक सम्मेलन में बोलते हुए एक चीनी वक्ता ने कुछ समय पूर्व कहा कि चीन में यह प्रचलित मान्यता है कि यदि वहां कोई मनुष्य अच्छे कर्म करता है तो उसका अगला जन्म भारत में होता है। इस मान्यता से भारत की सर्वोच्च महिमा को आँका जा सकता है।

परन्तु हमने तो सृष्टि स्रष्टा को ही भारत का गुणगान करते हुए देखा। जिस प्रभु की महिमा सम्पूर्ण मानव जगत करता है, वह स्वयं भारत की महिमा करता है। उनके महावाक्य हैं– "बच्चे, भारत अविनाशी खण्ड है, भारत देव-भूमि था, यहाँ स्वर्ग था, दूध घी की नदियां बहती थी। यहाँ परस्पर इतना प्यार था कि मनुष्य तो क्या शेर बकरी भी एक साथ पानी पीते थे। भारत सोने की चिड़िया था, यहाँ सोने चांदी के तो महल बनते थे, भारत पवित्र खण्ड है, स्वयं बाप को भी इससे अथाह प्यार है। जब यहां विपदा बढ़ती है, भारत गरीब हो जाता है, भारत की ग्लानि होने लगती है, धर्म लोप हो जाता है, तब मैं स्वयं अपने धाम से दौड़कर यहाँ आता हूं।"

भारत अविनाशी खण्ड है–

इतिहास कार जिस काल को न जानने के कारण अन्धकार युग कह देते हैं, वह अन्धकार युग नहीं स्वर्णिम युग था। 2500 वर्ष से पूर्व सम्पूर्ण विश्व ही भारत था। सम्पूर्ण पृथ्वी लोक पर एक ही विश्व व्यापी राज्य था। सर्वोच्च देव संस्कृति थी, जिसे इतिहास कार आर्य संस्कृति के नाम से जानते हैं। परन्तु लगभग 2500 वर्ष पूर्व एक भीषण प्रकोप व प्राकृतिक उथल पुथल से पृथ्वी अनेक विभिन्न खण्डों में बँट गई थी और आर्य संस्कृति का लोप होकर, हिन्दु संस्कृति व विभिन्न धर्मों का उदय हुआ था।

तो ये भारत देश आदि काल सत्युग में भी था, अब कलियुग के अन्तिम काल में भी वैसे ही स्थिर है और पुनः स्थिर रहेगा। क्योंकि–

भारत मातृ भूमि व पितृ भूमि है–

भारत को मातृ भूमि तो सभी कहते हैं, परन्तु हमने इसे पितृ भूमि भी कहा है। और इसे मातृ भूमि भी क्यों कहते हैं– इन दोनों के पीछे भी एक महान रहस्य है। नव सृष्टि रचना का कार्य दो महान शक्तियों के द्वारा होता है– एक निराकार सर्व शक्तिवान व दूसरा उनका साकार माध्यम प्रजापिता। यहां निराकार परमात्मा को सर्व का परम पिता माना जाता है परन्तु ब्रह्मा नव सृष्टि का रचयिता होने के कारण बड़ी मां (वृहद् + माँ) के रूप में जाना जाता है। क्योंकि उनके मुख द्वारा ही परमात्मा नव रचना की उत्पत्ति कराते हैं तो मानो ब्रह्मा ब्राह्मणों की जन्म दात्री माँ के रूप में भी प्रसिद्ध हो जाते हैं।

और क्योंकि प्रजापिता ब्रह्मा (बड़ी माँ) भारत में ही जन्म लेती है और परमात्मा मातृ शक्ति यानि नारी जाति को ज्ञान का कलश देते हैं इसलिए भारत को मातृ भूमि भी कहा जाता है। और इसी कारण आज तक भी भारत को भारत माता के रूप से नमन किया जाता है।

परमात्मा की दिव्य कर्म भूमि भी भारत ही है। वे भी भारत में ही अपना कार्य, सर्व धर्मों की आत्माओं को मुक्ति व जीवनमुक्ति देने का, सम्पन्न करते हैं। इसलिए परमपिता की कर्म भूमि होने के कारण भारत को पितृ भूमि कहना सम्पूर्ण सत्य होगा।

तो सोचो जो भूमि प्रजापिता ब्रह्मा व परम पिता परमात्मा की प्यारी हो, जिस पर भगवान स्वयं कार्य रत हो, उसकी अखण्डता को कोई चुनौती कैसे दे सकता है। चुनौती देने वाले भारत की अखण्डता को नहीं, स्वयं के महाकाल को चुनौती दे रहे हैं, गोया आव्हान कर रहे हैं। □

भारत पर सभी धर्मों ने राज्य किया–

यह एक गुह्य रहस्य जानने योग्य है कि यहाँ पर पिछले लगभग 2500 वर्षों में ही सभी धर्मों ने ही राज्य किया। और यही महान भारत देश है जहां आज तक भी सभी धर्मों का आदर होता है क्यों?

क्योंकि प्रजापिता ब्रह्मा जिसे सभी धर्मों के अनुयायी अपना आदि पिता स्वीकार करते हैं, भारत में ही विद्यमान थे– यहीं से उन्होंने चार मुख्य धर्मों की कलम कल्प के आदि में ही लगा दी थी। वे चार धर्म हैं– आदि सनातन देवी देवता धर्म, जो बाद में हिन्दू धर्म कहलाया, मुस्लिम धर्म, बुद्ध धर्म व इसाई धर्म। इन धर्मों के धर्मपिताओं के भी आदि पिता ब्रह्मा ही हैं, क्योंकि अपने कार्य काल में ही ब्रह्मा ने इन सभी धर्मों के धर्म पिताओं में भी उनके धर्मों के स्थपना की शक्ति व ज्ञान का बीज डाल दिया था।

वो क्योंकि सभी धर्म पिता ब्रह्मा की ही सन्तान हैं। अतः अविनाशी भारत का वर्सा (अधिकार) कुछ समय के लिए सभी धर्मों को प्राप्त हो जाता है। स्वर्ग के 2500 वर्ष तो भारत पर देवी देवता धर्म का एक छत्र राज्य रहता है क्योंकि यह अधिकार उन्होंने परमपिता से पहले ही प्राप्त कर लिया था। परन्तु बाद के 2500 वर्ष शेष 3 धर्मों के लिए हैं। तो यह तो सर्व विदित है ही कि भारत में बौद्ध, मुसलमान व इसाई तीनों ने ही राज्य किया। और भारत के कई शक्ति शाली राजा चाहते हुए भी व सामर्थ्य होते हुए भी उन्हें पराजित नहीं कर सकते। क्योंकि रहस्य यही है कि उन्हें भारत का राज्य अधिकार के रूप में ही प्राप्त हुआ था। और जैसे ही उनका अधिकार समाप्त हुआ पुनः भारत अपनी मूल स्थिति की ओर बढ़ चला है।

इसी के साथ एक रहस्य यह भी है इन चार मुख्य धर्मों के अतिरिक्त अन्य किसी भी सम्प्रदाय को सम्पूर्ण भारत पर राज्य करने का अधिकार ही नहीं मिल सकता। क्योंकि अन्य कोई भी धर्म इन

मुख्य धर्मों की शाखाएं ही हैं। अतः यदि उन्हें राज्य मिला भी तो सम्पूर्ण भारत का नहीं बल्कि किसी एक खण्ड का ही राज्य मिला। □

भारत सम्पूर्ण विश्व का पालन हार–

जैसे माँ-बाप बच्चों की पालना करते हैं, वैसे ही पितृ भूमि व मातृ भूमि ने भी हजारों वर्ष तक समस्त विश्व की पालना की। सभी जानते हैं कि मुस्लिम राजाएं व इसाई शासक भारत आने से पूर्व बहुत कम सम्पन्न थे। भारत की सम्पन्नता ने ही उन्हें आकर्षित किया और यहाँ की धन सम्पत्ति से ही उनकी पालना हुई।

कोई कह सकता है कि आज भारत विश्व का ऋणि है, परन्तु सत्यता यह है कि वह ऋण नहीं है, वापसी है। क्योंकि सृष्टि स्रष्टा ने अपनी रचना में सम्पूर्ण सन्तुलन रक्खा है। जो किसी समय सम्पत्ति ले गये थे, वे ही अब लौटा रहे हैं। इसलिएय भारतवासियों का सिर नीचा नहीं, सदा ही गौरव से ऊँचा रहा है व ऊँचा रहेगा। ■

भारत देव-भूमि, ऋषियों की भूमि था–

यह तो प्रसिद्ध है ही कि भारत देव-भूमि था, परन्तु इसका पूरा स्पष्टीकरण आज भारतवासियों को नहीं है। देवी देवताओं के पुजारी भारतवासी यह भूले हुए हैं कि ये देवता हमारे ही पूर्वज थे अर्थात हम उनकी ही सन्तान हैं। इसलिए भारतवासी अपने गौरव को, अपने आत्म-सम्मान को भूलकर विदेशों की ओर कुछ सीखने की दृष्टि से मुख उठाये हुए हैं।

परन्तु हे भारत वासियो– तुम सभी के शिक्षक हो, तुमने ही सम्पूर्ण विश्व को श्रेष्ठ संस्कृति, दर्शन व आध्यात्म की शिक्षा दी थी। ये विज्ञान और तकनीकी का ज्ञान, भारत में ही कभी अपने सर्वोच्च शिखर पर था, जो कि काल के गाल में लोप हो चुका। अब भरत पुनः विज्ञान के क्षेत्र में भी सर्वोच्च बनेगा। विश्व के अनेक देश तो विज्ञान की सर्वोच्चता से विनाश को ही प्राप्त होंगे परन्तु भारत में विज्ञान का विकास भारत को पुनः स्वर्णिम बनायेगा।

अतः हे ऋषियों की सन्तानों– अपने स्वमान को मत भूलो। यहाँ ऋषियों ने पावनता की गंगा बहाई थी। तुम उन्हीं के तो वंशज हो। तुम पथ भ्रष्ट क्यों! अपने स्वाभिमान को जानकर पुनः सम्पूर्ण विश्व के दाता बनकर सबको मानवता का सच्चा अर्थ समझायो। □

भारत पर भगवान की नज़र है–

आदि काल में भारत की सीमाएँ अति विशाल थीं। अब पुनः बेहद में फैल जाऐंगी। इसलिए डर की कोई बात नहीं। भारत की एकता व अखण्डता से कोई भी खिलवाड़ नहीं कर सकता। क्योंकि–

जिस देश पर सर्वशक्तिवान की नज़र हो, वह कितना शक्तिशाली होगा जिस देश में लाखों नर नारियों ने पवित्रता का बल धारण कर लिया हो, उस बल के समक्ष आसुरी शक्तियों का बल कितनी देर ठहर सकेगा। जिस देश में कई हजार युवक व युवतियों ने देश को स्वर्णिम बनाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया हो, वहां अन्धकार का साम्राज्य कब तक रह पायेगा। जिस देश पर रोज अमृत वेले अनेक योगी व तपस्वी, शान्ति, शक्ति व पवित्रता के प्रकम्पन फैलाते हों, उस देश की महानता को भला कौन नष्ट कर सकेगा। और सबसे मुख्य बात– जिस महान भूमि पर रोज भगवान की दृष्टि पड़ती हो, उसे कुचलने का भला कौन साहस कर सकेगा।

इसलिए हे भारत वासियो, चिन्ता न करो, जिस देश की रक्षा स्वयं सर्व शक्तिवान कर रहा हो, कोई भी बलशाली आसुरी सम्पदा, उसकी अखण्डता को नष्ट नहीं कर सकेगी।

चाहे सम्पूर्ण विश्व मिलकर भारत को कुचलने का प्रयास करे, चाहे कोई भी देश भारत की अखण्डता के प्रति ईर्ष्या करे, चाहे कोई भी शक्ति यहाँ अस्थिरता का वातावरण लाने का दुस्साहस करे, परन्तु विजय भारत की ही होगी। और किसी

के भी घृणित प्रयास केवल उनकी ही मौत का कारण बनेंगे। □

अब खेल की तरह देखना–

विधि के अविनाशी विधान के अनुसार, जिस क्रम से विभिन्न धर्मों की स्थापना हुई है, उसी क्रम से वे नष्ट हो जाऐंगे। यह प्रसिद्ध महाभारत काल है, पुनः पृथ्वी पर आसुरी सम्पदा का बोल-बोला है और उसके नष्ट होने का समय है। इसलिए उन्हें नष्ट होता देख कर घबराना नहीं कि ये क्या हो रहा है– बल्कि अटल भावी है। अनेक कारण बनेंगे, समझौतों के प्रयास भी होंगे परन्तु महाभारत काल की तरह सब असफल होगा।

इसलिए आने वाली, इस शताब्दी के अन्तिम चरण को महान परिवर्तन के रूप में देखना और यह निश्चित है कि 21वीं शताब्दी के प्रथम चरण में हम भारत वासी एक नव स्वर्णिम युग में प्रवेश करेंगे। जहाँ भारत ही भारत होगा, सर्वत्र सुख का साम्राज्य होगा और पृथ्वी पर केवल देवताओं के ही चरण स्पर्श करेंगे।

महाराष्ट्र का सर्वे करने पर भिवंडी में भ्राता परशुराम धाकड़, विधानसभा सदस्य के साथ ब्र० कु० नलिनी, योगिनी, कुन्ती तथा अन्य ब्र० कु० भाई बहनें।

कलकत्ता– दिल्ली पदयात्रा के गोबिन्दपुर (धनबाद) पहुंचने पर आध्यात्मिक कार्यक्रम

कलकत्ता में 'भारत एकता युवा पदयात्रा' उदघाटन समारोह में ब्र० कु० बिन्दु बहिन राज्यपाल महोदय भ्राता उमाशंकर दीक्षित को युवाओं की प्रतिक्षाएं भेंट कर रही हैं।

नैनीताल में संग्रहालय देखने के पश्चात् भ्राता एम. पी. मालवीय अतिरिक्त जिला जज तथा उन की धर्मपत्नी के साथ ब्र० कु० विमला तथा अन्य ब्र० कु० भाई बहिनें।

और अब शांति का वर्ष आगामी वर्ष १९८६

ब्र० कु० रामऋषि शुक्ल, लखनऊ

संयुक्त राष्ट्रों का संकल्प है कि आगामी वर्ष १९८६ को विश्व-मानवता द्वारा शान्ति वर्ष के रूप में मनाया जाय। इस प्रकार के कतिपय वर्षों के मनाये जाने के—यथा बाल वर्ष, महिला वर्ष आदि—आयोजन विगत वर्षों में होते रहे हैं। और इस वर्ष को अर्थात् १९८५ को युवा वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। दरअसल युवा वर्ग के लिए यह चुनौती विशेष अर्थ रखती है कि विश्व में अशान्ति को समाप्त कर शान्ति की स्थापना की जाय।

आध्यात्मिक क्षेत्र में कार्यरत रहस्यवेत्ताओं और द्रष्टाओं का ऐसा मानना है कि विश्व में शांति अपने सहज स्वाभाविक क्रम में आ रही है। शांति आज मानवता की सबसे बड़ी समस्या है, क्योंकि अशांति आज चरम बिन्दु पर है और अन्य सभी उलझनें क्रमशः किंवा एकबारगी ही सुलझायी जा सकती हैं यदि यह सर्वप्रमुख समस्या सुलझा ली जाय। अस्तु, अध्यात्मवादी लोगों का ऐसा विश्वास है कि शांति उसी प्रकार आ रही है जिस प्रकार रात के बाद दिन का आगमन होता है। उनके मतानुसार सृष्टि-जगत के काल-क्रम में यह अत्यन्त निर्णायक काल है, यह श्रेष्ठ चेतना में विश्व-मानवता के भाग्योदय की परम सौभाग्यमयी वेला है, जबकि निराशा के अन्धकार का अन्त होने को आ गया है और आशा की प्रकाश-किरणों का आनन्दमय वातावरण जगत में छा ही जाने वाला है। यह सब कुछ ठीक उसी प्रकार घटित हो रहा है जिस प्रकार घोर रात्रि के बाद अपने-आप ही उदय-प्रभात का और उषा-काल का आगमन एक ध्रुव सत्य होता है। रात्रि का अभिप्राय ही होता है निश्चेतना, अवसाद और तन्द्रा का दुःखमय वातावरण और दिन का मतलब ही होता है कि प्रकाश से परिपूर्ण आनन्द, उल्लास तथा सौख्य का समय। सारांशतः अशांति चूंकि इस समय चरम सीमा तक पहुँच चुकी है इसलिए उसका सहज ही अन्त और शान्ति के सूर्योदय का आगमन अनिवार्य रूप से घटित होने को है।

कभी सुख-शांति का भी समय था

जो लोग ऐसा मानते हैं कि हमारा यह जगत सदा काल से अशांतिमय रहा है और वास्तव में विश्व में शांति कभी रही ही नहीं वे सभी भारी भ्रम में हैं। इस प्रकार के लोग ऐतिहासिक आलेखों का सीमित दृष्टिकोण से ही आकलन करते हैं और अतीत काल के परोपकारी शासकों की उत्तम शासन-व्यवस्थाओं तथा सरकारों को भी ज्यादा वजन नहीं देते। यहाँ तक कि भारतीय इतिहास का गुप्त काल, जिसे 'स्वर्ण काल' भी कहा जाता है, भी इनको बहुत ज्यादा प्रभावित नहीं कर पाता। इनके मत से, कुछ निश्चित क्षेत्रों में और वह भी कुछ निश्चित अवधियों के लिए शांति का सम्पूर्ण विश्व में स्थायी शांति के दृष्टिकोण से कोई खास महत्व नहीं ठहरता। इन लोगों का ऐसा भी मत है कि यदि संसार के कुछ भागों में जनता को कुछ समय के लिए समृद्धि प्राप्त रही भी हो तो भी समग्र संसार की सम्पूर्ण विश्व-मानवता को स्थायी सुख-शांति की प्राप्ति के सन्दर्भ में वह बेमानी या अर्थहीन हो जाती है।

किन्तु इतिहास इस पृथ्वी पर मानवीय अस्तित्व की सम्पूर्ण गाथा तो नहीं है। वह तो जागतिक जीवन के मार्ग में मानवता की जय-यात्रा का महज एक टुकड़ा है—और वह भी विवादों तथा सन्देहों में उलझा हुआ टुकड़ा। प्रागैतिहासिक दिनों और उनसे जुड़े पौराणिक कथानकों पर यदि स्थिर चित्त और निष्पक्ष दृष्टिकोण से विचार किया जाय तो हमें ऐसे महारानियों-महाराजाओं

के वर्णन मिलते हैं जो सचमुच परोपकारी थे और जिनके विश्व-साम्राज्य में घी-दूध की नदियाँ बहती थीं तथा विश्व-समाज में सच्ची सुख-शांति थी। बिलकुल शुरू के दिनों की बात है, विश्व की थोड़ी-सी जनसंख्या कुछ लाखों तक सीमित थी और उस काल में एक मानव-परिवार तथा एक विश्व-समाज होने के कारण स्वभावतः संसार में सुख-शांति थी। चूँकि उस समाज में शांति स्थायी रूप से विराजित थी इसलिए वहाँ प्रत्येक व्यक्ति को नैसर्गिक जन्म-सिद्ध अधिकार के रूप में समृद्धि प्राप्त थी। उस काल के लोगों के बारे में हमारी प्राचीन पुस्तकों में जो वर्णन मिलते हैं उन पर अगर यकीन लाया जा सके तो यह प्रकट है कि वे 'अमरों की जाति' के लोग श्रेष्ठाचारी समाज वाले प्राणी थे जिनके जीवन में दुःख नाम की कोई चीज नहीं थी और जो गौरवशाली तथा वैभवशाली जीवन-यापन करते थे।

हमारे पवित्र ग्रंथों में हमारे उन प्राचीन काल के श्रेष्ठ-समुन्नत पूर्वजों के बारे में जो आख्यान हैं वे इतने महिमामय हैं कि उनके मुकाबले वर्तमान मानवता अधोगति को प्राप्त एक ऐसी मानव-जाति है जिसके प्राणी वस्तुतः पतित जीवन-विधा का जीवन जी रहे हैं। वे श्रेष्ठ और उच्च लोग थे जबकि हम निम्न तथा तुच्छ लोग हैं। उनका जीवन आनन्दमय तथा ईश्वरीय वरदानों से परिपूर्ण था जबकि आज उसी पृथ्वी पर जीवन कष्टमय बन गया है तथा मानव अभिशप्त जीवन जी रहा है। सच्चे अर्थों में वे 'अमरों की जाति' के लोग थे क्योंकि वे सुख में जनमते थे, सुखमय जीवन-यापन करते थे और पूर्ण आयु प्राप्त होने पर वस्त्रों की भाँति सहज रीति से तथा सुखपूर्वक अपने शरीरों का परित्याग कर देते थे। उनकी तुलना में हम वर्तमान मानव-समाज के लोग कष्टों में जनमते हैं, कष्टमय जीवन-यापन करते हैं और नाना प्रकार के कष्टमय तरीकों से शरीरों का परित्याग करते हैं, और इसलिए आज हम 'मर्त्य लोग' बन गये हैं तथा हमारा संसार ही 'मत्यु लोक' अन्यत्र नरक बन गया है।

यह सत्य है कि प्राचीन ग्रंथों में हमें भयंकरतम महायुद्धों के वर्णन भी मिलते हैं। तथापि इन वर्णनों के ही अनुसार, उन पौराणिक महायुद्धों में अपेक्षाकृत कम संख्या वाले अच्छे लोग ही विजयी होते हैं तथा अपेक्षाकृत अधिक संख्या-बल तथा साधन-बल वाले तमाम खराब लोग विनाश को प्राप्त हो जाते हैं। इस सन्दर्भ में सर्वोपरि महत्त्व की बात यह है कि ऐसे महायुद्धों के काल में ही अनाचारी लोगों के कुकृत्यों के कारण उत्पन्न विश्व-प्रकृति के तत्वों का प्रदूषण भी समाप्त हो जाया करता है और परिष्कृत एवं नवीनीकृत तत्व-योजना के फलस्वरूप नये विश्व की स्थापना का सत्कार्य सम्पन्न हो जाया करता है। पौराणिक महायुद्धों के वर्णन हों अथवा प्रलय कथाओं की बात हो, दोनों से ही इस तथ्य की पुष्टि होती है कि उपर्युक्त घटना-क्रम अथवा प्राकृतिक उथल-पुथल के फलस्वरूप हमारी इस पृथ्वी पर नयी दैवी मानवता तथा नये स्वर्गिक संसार का निर्माण सम्पन्न हो जाया करता है।

प्राचीन विवरणों में प्रारम्भ-काल की श्रेष्ठाचारी जाति और श्रेष्ठ दैवी समाज के जो वर्णन मिलते हैं वे स्पष्टतः पौराणिक महायुद्धों तथा कथित प्रलय-लीलाओं के बाद अस्तित्व में आये नये विश्व की दवी मानवता तथा स्वर्गिक समाज के ही वर्णन हैं। पौराणिक युद्धों और प्रलय-लीलाओं से सम्बन्धित पूर्वीय और पश्चिमी दोनों ही वर्णनों में समान रूप से यह माना गया है कि पुरानी मानवता से नयी मानवता का जन्म हुआ, पुराने विश्व से नये विश्व का सृजन हुआ और इस प्रकार ही जागन्नियन्ता ने नये जगत की रचना की—नयी सृष्टि का सृजन किया। दोनों पक्ष ही यह स्वीकार करते हैं कि प्रारम्भ-काल में पृथ्वी पर दिव्यजन और देवी-देवताओं का तथा उनके स्वर्गिक समाज का अस्तित्व था, किन्तु भारतीय विवरण इस अर्थ में अधिक प्रामाणिक और अधिक विस्तारपूर्ण तथा स्पष्ट है कि इसमें ऐसी दैवी महारानियों तथा ऐसे दैवी महाराजाओं के वर्णन हैं जो विश्व-अधिपति

थे और जिनके कल्याणकारी साम्राज्य में सद्धर्म का शासन था तथा समस्त जनता को वास्तविक सुख-शांति-समृद्धि प्राप्त थी। इस प्रकार कथित आधुनिक लोगों की यह अवधारणा कि विश्व में कभी शांति रही ही नहीं, पूर्णतया खण्डित हो जाती है और असत्य सिद्ध हो जाती है।

शांति की सम्भावनाएँ : संयमित किन्तु समुज्ज्वल

यदि हम ध्यानपूर्वक देखें तो हमारे इस संसार के आज ठीक वैसे ही हालात हैं जैसे कि महाभारत के कथित महासमर और प्रलय की कथित विपदा के पहले विद्यमान थे। महाभारत का मतलब होता है संसारव्यापी पारमाणविक महायुद्ध और प्रलय का तात्पर्य होता है विश्व-प्रकृति के तत्वों की व्यवस्था में भारी उथल-पुथल। दोनों की ही आशंकाएँ आज अत्यधिक रूप में विद्यमान हैं। परमाणु आयुधों के वर्तमान संग्रह के अंशमात्र के इस्तेमाल से हमारा यह पृथ्वी-ग्रह कई बार नष्ट किया जा सकता है और नित्यप्रति बढ़ता हुआ प्राकृतिक प्रदूषण विश्व-परिवेश में विष घोल रहा है तथा उथल-पुथल की स्थितियाँ उत्पन्न कर रहा है। नाभिकीय आयुधों के महासमर का खतरा आज मनुष्य-जाति के सिर पर विद्यमान है और प्राकृतिक तत्वों की अव्यवस्था प्रलय के खतरे की घंटी बजा रही है। सारांश यह कि हमारे वर्तमान संसार की हालत आज हूबहू उस मरीज जैसी हो गयी है जिसके जीवन की कोई आशा शेष नहीं रही है और जो बस अपने अन्तिम दिन गिन रहा है।

मानव स्वभाव ही कुछ ऐसा है कि सभी ओर से एकदम निराश हो जाने पर ही हम परमात्मा की शरण में जाते हैं। इसी प्रकार हमारी मानव-जाति की कहानी भी कुछ ऐसी ही रही है कि ईश्वर की शरण तभी ली जाती है तथा भागवत अनुग्रह की याचना तभी की जाती है जबकि सबकुछ मनुष्य के नियंत्रण के एकदम बाहर चला जाता है। नास्तिक दर्शनों के प्रचारकों की तमाम लम्बी-चौड़ी बातों और वर्तमान जगत को प्रभावित कर रहे उनके समस्त कार्य-कलाप के बावजद आज यह एक तथ्य है कि हमारे इस संसार की और इस पर निवास करते मानव-प्राणी की रक्षा अब केवल परमात्मा ही कर सकता है। ठीक ऐसे ही संकट के समयों पर परमात्मा पृथ्वी पर अवतरित होता रहा है और मानवता का मार्ग-दर्शन करके संसार का उद्धार तथा कायाकल्प करता रहा है। वस्तुतः वही समय अब पुनः आ पहुँचा है कि परमात्मा संसार के मामलों में हस्तक्षेप करे तथा संसार का उद्धार करे। अतएव, परमात्मा संसार में धर्म की पुनः संस्थापना करने के लिए तथा संसार की और जागतिक जीवन की विनाश से रक्षा करने के लिए ठीक उसी प्रकार पुनः अवतरित हो चुके हैं जिस प्रकार कि आज से पाँच हजार पूर्व महाभारत-काल में वह अवतरित हुए थे।

परमात्मा के अनुग्रह से मानवता का पुनः आध्यात्मिक नव जन्म किंवा कायाकल्प हो रहा है और इसी प्रकार विश्व का नवजन्म या कायाकल्प भी घटित हो रहा है। हो सकता है कि कुछ वर्ष या एकाध दशक उसी प्रकार कष्टमय साबित हों जिस प्रकार महाभारत-काल में या प्रलय के दिनों में साबित हुए थे। किन्तु वर्तमान काल में भी जो लोग परमात्मा के बनेंगे और उनके विश्व नव-निर्माण के परम श्रेष्ठ कार्य में योगदान करेंगे उनके लिए यह समय भी कष्टप्रद नहीं होगा। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय ने और कुछेक अन्य आध्यात्मिक संगठनों ने भी यह साहसिक उद्घोषणा की है कि नयी मानवता की और नये विश्व की आधारभूमि भली प्रकार तैयार की जा चुकी है। नये शिशु की ही भाँति नया विश्व वस्तुतः जन्म ग्रहण कर चुका है। अमरों की जाति के और देवी-देवता समाज के दिन हमारी इस पृथ्वी पर यथार्थ रूप में पुनः लौट रहे हैं। कल तक जिन बातों को विशुद्ध कल्पना कहा जाता था वे आज जगत का जीवन्त सत्य बनने जा रही है।

जो शांतिमय और सुखमय नया विश्व धीरे-

(शेष पृष्ठ २९ पर)

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

ब्र० कु० दिगम्बर, रांची

भारत में प्रतिवर्ष श्रीकृष्ण जन्माष्टमी बड़ी धूम-धाम से मनायी जाती है। इसकी तैयारी एक माह पूर्व से की जाती है। गाँव हो या शहर चारों तरफ चहल-पहल रहती, श्रावण मास की शुरुआत आते ही शिव-मंदिर पर लाखों नर-नारी गंगा का पानी (कावड़) चढ़ाने के लिए चल देते। अनेक डिजाइनों से सजे गेरुवा वस्त्र पहने हुए रास्ता इतना शोभायमान होता कि कुछ वर्णन ही नहीं कर सकते एवं काँवड़ियों के कंधों में अनेक प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित किया गया कावड़ सोने में सुहागा ला देता। सैकड़ों मील दूर का सफर हंसते-हँसते पार करते हर के मुख पर आवाज़— "बोल-बम, ताड़क बम पार करेगा, ऊपर वाला पार करेगा, भोला बाबा पार करेगा"···इन नारों से सारा रास्ता ही गूँज उठता। हर एक के मुख में ईश्वरीय प्यार व नशे की मुस्कान से थकावट की महसूसता नहीं होती है।

इस प्रकार चौथे सोमवार के दिन पावन त्यौहार 'रक्षा-बन्धन" का शुभ दिन आता एवं ठीक उसके आठवें दिन "श्रीकृष्ण जन्माष्टमी" बड़ी ही धूम-धाम से मनायी जाती है। भला— शिव पर जल चढ़ाने के साथ-साथ रक्षा-बन्धन एवं जन्माष्टमी का क्या रहस्य है। एक के साथ दूसरा एवं तीसरे का क्या संबन्ध है ?

जरूर ही गुह्य राज आध्यात्मिक ही होगा ?

ज्ञान सागर, पतित पावन, दुःखहर्ता-सुखकर्ता, सदाशिव कल्याणकारी, परम प्रिय, परमपिता परमात्मा शिव जो सर्व का परमपिता, परमशिक्षक एवं परम सद्गुरु हैं, सर्व आत्माओं के कल्याणार्थ इस धरा पर कलियुग के अन्त एवं सतयुग के आद पुरुषोत्तम संगम यग पर अवतरित होते हैं और सहज राज योग, सहज ज्ञान का बीज बोते हैं। निराकार शिव का साकार माध्यम "प्रजापिता ब्रह्मा" भी सहज गीता का श्रवण कर अन्य आत्माओं को भी ज्ञानामृत का श्रवण कराते हैं, पान कराते हैं। जिससे अज्ञान रूपी अंधकार में मूर्छित आत्मायें जग जाती हैं और अन्य आत्माओं को भी जगाती हैं। परमपिता परमात्मा जो ज्ञान का सागर, पतित पावन हैं, उनसे निकली चैतन्य ज्ञान-गंगाएँ पुनः सारे जहान के अंधकार में (अज्ञान रूपी) भटकती आत्माओं को ज्ञानामृत का पान करा कर जागृत करते हैं एवं आत्माओं की रक्षा पाँच विकारों से करने के लिये शिव परमात्मा के साथ पवित्र जीवन व्यतीत करने का प्रतिज्ञा-दिवस "रक्षा-बन्धन" यादगार रूप में मनाते हैं। क्योंकि पवित्रता के बिगर कोई भी आत्मा पावन दुनिया श्रीकृष्ण पुरी में जा नहीं सकता। कहावत भी है कि—देवताओं की परछाँई पतित दुनिया में टिक नहीं सकती तो चैतन्य में देवता बनने वाले होवनहार कैसे जा सकेंगे।

जब पवित्रता की रक्षा मनसा, वाचा, कर्मणा तीनों रूप से करते, सम्पूर्णता को पाते, प्रतिज्ञा को निभाते, तब ही प्रालब्ध के रूप में सम्पूर्ण पावन "श्रीकृष्ण जन्माष्टमी" का यादगार दिवस आता है।

ऐसे पावन शुभ घड़ी पर सर्व के प्रति शुभ संदेश है कि सुख-शान्ति के लिए पवित्रता को अपनाना है क्योंकि पवित्रता ही सुख-शांति की जननी है और पवित्रता का दाता परम प्रिय, परमपिता, परमात्मा शिव बाबा है। शिव बाबा का संदेश है कि "हे आत्माओं, इस पुरानी पतित दुनिया, पतित शरीर में रहते हुए अब पावन दुनिया में

चलने के लिए देह सहित, देह के सर्व दैहिक संबंधों को बुद्धि से भूल कर एक अविनाशी आत्मिक एवं परमात्मिक संबंध को याद रखते हुए बुद्धि की डोर एक साथ रख कर सर्व पापों से मुक्त हो सकते हैं क्योंकि विकारों से मुक्ति के बाद ही पुनः सम्पूर्ण पावन दुनिया सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम बकुण्ठ धाम में पदार्पित हो सकते हैं। पवित्रता, सुख और शांति आपका ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है अब नहीं तो कभी नहीं। ○

श्रीकृष्ण की आत्मा सत्युग में सूर्यवंशी देवता कुल में पूज्य महाराजन के रूप में 8 जन्म, त्रेतायुग में चन्द्रवंश में राज्य भाग्य सहित 12 जन्म, द्वापर और कलियुग में भक्तराजा अथवा प्रजा के रूप में 63 जन्म लेती है। अब संगम युग में परमात्मा शिव ने उसके साधारण वृद्ध तन में प्रवेश करके उसका अलौकिक नाम 'ब्रह्मा' रखा है।

FIRST PRINCE OF SAT-YUGA (HEAVEN).

सतयुग के प्रथम महाराजकुमार श्रीकृष्ण

और अब शांति का वर्ष आगामी वर्ष १९८६

(शेष पृष्ठ २७ का)

धीरे प्रकट हो रहा है वह प्राचीन काल के देवी-देवताओं का ही सतयुगी विश्व या पृथ्वी पर स्वर्ग होगा। वर्ष १९८६ में हम इतनी आशा तो कर ही सकते हैं कि लोग यह मानने लग जायें कि हमारे मध्य सचमुच शांति के लिए रचनात्मक और सार्थक कार्य प्रारम्भ हो चुका है। निराशा के बादल छंटने लग सकते हैं और शांति की सम्भावनाएँ उज्ज्वल हो जा सकती है। मानव में ऐसा आत्मविश्वास पैदा हो सकता है कि भविष्य सचमुच उज्ज्वल है। शांति का अभियान बलशाली और महत्वपूर्ण बन जा सकता है। काफी संख्या में लोग ऐसा विश्वास करने लग सकते हैं कि चाहे कैसी भी चुनौतियाँ क्यों न हों, अन्ततः जगत में जीवन रक्षित होगा और शांतिमय समाज तथा श्रेष्ठ मानव का स्वप्न साकार होगा। यदि इतना भी सम्भव हो सका तो हम समझेंगे कि १९८६ को 'शांति-वर्ष' मनाने का हम सभी लोगों का कार्य सार्थक और सुपरिणामकारी रहा। □

(पृष्ठ ३२ का शेष)

बरनाला—बरनाला सेवाकेन्द्र की ओर से गांव अमल सिंह, भदलवड्ड, धौला, ठीकरीवाल, और गाँव द्रमीदी में ग्राम प्रदर्शनी और प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया जिसमें अनेक आत्माओं को परमपिता परमात्मा शिव का सन्देश मिला।

जबलपुर—युवा वर्ष के उपलक्ष में गाँव-गाँव में ईश्वरीय सन्देश देने हेतु जबलपुर से कुशनेर तक ३० कि० मी० की युवा पद यात्रा का आयोजन किया गया। यह पदयात्रा जबलपुर लार्डगंज से आरम्भ होकर क्रमशः अधारताल, सुहागी महाराजपुर, इमलिया, उर्दुवा, कंदरा खेड़ा केवलारी पनागर, देवरी, रैपुरा, मोहनिया होते हुए कशनेर पहुँची। पदयाथा का शुभारम्भ डा० श्रीमती टी० गुहा संयुक्त-संचालिका परिवार नियोजन प्रशिक्षण केन्द्र जबलपुर के आतिथ्य में पदयात्रियों को शिव बाबा का ध्वज प्रदान किया गया। प्रत्येक गाँव में ग्रामवासियों को पदयात्रा का उद्देश्य समझाया गया साथ ही साथ प्रवचनों ग्रामीण विकास चित्र प्रदर्शनी द्वारा ईश्वरीय सन्देश दिया गया। कई गावों में गीता पाठशाला खोलने के निमन्त्रण प्राप्त हुए हैं।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० लक्ष्मण, सत्यनारायण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित

"अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष में ग्राम सेवाओं की अनोखी लहर"

भारत के कोने-कोने से उमंग उत्साह भरे अनेक समाचारपत्रों से इस युवा वर्ष में ग्राम सेवाओं की एक अनोखी लहर दिखाई दे रही है। ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के प्रत्येक सेवाकेन्द्र के युवकों द्वारा ग्राम निवासियों को ईश्वरीय सन्देश दे उन्हें व्यसनों से मुक्त कराने के सफल प्रयास हो रहे हैं। हर स्थान से छोटी-छोटी एक, दो या तीन दिन की पद यात्रायें निकाल अनेक ग्रामों में युवा भाई बहिनें जाते हैं और प्रदर्शनी, प्रोजेक्टर शो, प्रवचन आदि करके प्रचलित अन्धविश्वासों, कुप्रथाओं, बाल विवाहों, दहेज प्रथाओं तथा मादक द्रव्यों के सेवन आदि की बुराईयों का दान ले हजारों आत्माओं को चरित्रवान जीवन बनाने की प्रेरणा दे रहे हैं। ऐसे विस्तार पूर्वक समाचार मिलते ही रहते हैं।

कलकत्ता—डिब्रूगढ़ और पुरी से चलकर पद यात्राओं का संगम कलकत्ता की मुख्य पदयात्रा से हुआ। २० ता० को इन पद यात्रियों का स्वागत आध्यात्मिक संग्रहालय में किया गया। संग्रहालय को बहुत सुन्दर ढंग से फूलों से सजाया गया था। प्रातः दूसरे दिन रायबगान सेवा-केन्द्र पर विशेष स्वागत कार्यक्रम रखा गया। सुन्दर झांकियों सहित शान्ति पद यात्रा निकाली गयी। इसके अतिरिक्त सायं को एक विशाल समारोह का आयोजन किया गया। यूथ फेस्टीवल का उद्घाटन पश्चिम बंगाल के राज्यपाल भ्राता उमाशंकर दीक्षित द्वारा सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर भ्राता शंकर प्रसाद मित्रा, एम० पी० जी भी पधारे थे। दूरदर्शन एवं रेडियो न्यूज के माध्यम से भी घर बैठे लोगों ने इस विशेष कार्यक्रम का लाभ लिया। मुख्य समाचारपत्रों में भी इसके समाचार प्रकाशित हुए।

बिलासपुर—प्राप्त समाचार के अनुसार गांव-गांव में ईश्वरीय सन्देश देने हेतु बिलापुर से रतनपुर तक ४० कि० मी० की युवा पद यात्रा का आयोजन किया गया। इस पदयात्रा में १०० राजयोगी भाई बहिनों ने भाग लिया। पदयात्रा के गाँव-गाँव में पहुँचते ही ग्रामवासियों ने पद-यात्रियों का भव्य स्वागत किया। उसके पश्चात ब्र० कु० भाई बहनों ने अपने प्रवचन के दौरान उन्हें नशीले पदार्थों के सेवन एवं अन्य दुर्व्यसनों से अवगत कराते हुए उन्हें बताया कि कैसे सहज ज्ञान और राजयोग के अभ्यास से इन बुराईयों से छुटकारा पाकर अपना जीवन दिव्य और श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। फलस्वरूप हजारों व्यक्तियों ने अपने जीवन में कभी भी इन व्यसनों का सेवन न करने का संकल्प लिया एवं प्रतिज्ञा पत्र भरे। और अपनी जेब से बीड़ी, तम्बाकू, सिग्रेट आदि निकालकर दे दी। ग्राम निवासियों ने प्रभावित होकर प्रदर्शनी लगाने के निमन्त्रण भी दिये।

जामनगर—समाचार मिला है कि जामनगर से खम्बा-लिया तक युवा पद यात्रा द्वारा १५ गावों के हजारों आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया गया। गाँव-गाँव में पर्चे बाँटे गये, प्रतिज्ञा पत्र भरवाये गये। इस युवा पदयात्रा का उद्घाटन जामनगर के कलेक्टर द्वारा सम्पन्न हुआ। उन्होंने इस पदयात्रा के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सचमुच यह युवक एक महान कार्य करने के लिए निकले हैं। तीन दिन की पदयात्रा के पश्चात खम्बालिया गाँव में विश्व हिन्दू परिषद संस्था ने स्वागत किया।

महुवा (गुजरात)—प्राप्त समाचार के अनुसार २२ कि० मी० की एक दिवसीय पदयात्रा में ५ ग्रामों के आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित किये गये। ग्राम के सरपंचों एवं अन्य ग्रामजनों ने इस पदयात्रा का स्वागत किया। लगभग ४ हजार आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश मिला।

दिल्ली—विकासपुरी सेवाकेन्द्र से दो दिवसीय पदयात्रा निकाली गई। नजफगढ़ में ६४ गाँवों के चेयरमैन भ्राता

रामनाथ जी ने इस पदयात्रा द्वारा हो रहे महान कार्यों की सराहना की तथा अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि आज समाज में जो बुराईयाँ पनप रही हैं—उनका बहिष्कार होना ही चाहिए।

सिरसा—समाचार मिला है कि ३५ कि० मी० की एक दिवसीय पदयात्रा में ६ गाँवों की ईश्वरीय सेवा हुई। हर स्थान पर ग्राम निवासियों ने प्रतिज्ञा पत्र भी भरकर दिये। इस यात्रा के फलस्वरूप गाँव-गाँव से प्रदर्शनी करने के निमन्त्रण प्राप्त हो रहे हैं। एलनाबाद में ५ दिन की आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है।

बड़ौदा—सेवाकेन्द्र की ओर से बड़ौदा, मांजलपुर, अतलापुरा, सांगमा, पदरा, ताज पुरा तक की (२२ मील) भारत एकता युवा पद यात्रा का आयोजन किया गया। सोमनाथ-दिल्ली की पदयात्रा में भाग लेने के लिए जाने वाले पाँच युवा पाँडवों का हार्दिक स्वागत छोटी यात्रा से किया गया। सभी स्थानों पर वहाँ के प्रमुख लोगों द्वारा पद यात्रा का स्वागत विभिन्न-विभिन्न ढंग से किया गया। इस युवा पदयात्रा द्वारा अनेक आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया गया तथा अनेक आत्माओं से बुराइयों को त्यागने के लिए प्रतिज्ञा करवायी गयी!

आगरा—ग्राम सेवा अभियान एवं भारत एकता युवा पदयात्रा का कार्यक्रम आगरा जोन में निरन्तर चल रहा है। प्रत्येक रविवार सोमवार को एवं अवकाश के दिनों में आगरा जोन के सभी युवा भाई-बहिनें पदयात्रायें करके ईश्वरीय सन्देश दे रहे हैं। आगरा से शमसाबाद, आगरा से फतहपुर सीकरी, सिकन्दराराऊ से हसौना, हाथरस से सादाबाद, हाथरस से सासनी इस तरफ लगभग पाँच पद यात्राओं द्वारा कई हज़ार आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

भरतपुर—सेवा केन्द्र की ओर से लघु भारत एकता युवा पद यात्रा का शुभारम्भ किया गया। इस पदयात्रा का उद्घाटन भरतपुर ज़िले के अतिरिक्त ज़िलाधीश भ्राता आर० पी० पारीख जी ने किया। यह पद यात्रा भरतपुर से फतेहपुर सीकरी तक आयोजित की गयी। इसके बीच में जितने भी गाँव आये सभी ग्रामवासियों की ईश्वरीय सेवा की गयी तथा उनसे बुराइयों का दान लिया गया। ग्रामवासियों ने खूब स्वागत करते हुए कहा कि हमारे भी भाग्य खुले हैं आपकी यात्रा का उद्देश्य महान है तथा शिव बाबा का ज्ञान अति उत्तम और श्रेष्ठ है।

सिन्दरी—समाचार मिला है कि कलकत्ता से दिल्ली तक पहुँचने वाली पदयात्रा का स्वागत व ईश्वरीय सेवा का विशेष प्रबन्ध गोविन्दपुर एवं धनबाद में सिन्दरी सेवा केन्द्र की ओर से किया गया। सर्वप्रथम आर० एस० महाविद्यालय के छात्राओं द्वारा फूल मालाओं से स्वागत किया गया, इसके पश्चात यूथ-क्लब के युवकों ने पदयात्रियों का बड़े स्नेहपूर्वक स्वागत किया। यह पदयात्रा पूरे धनवाद शहर में फेरी लगाकर सभी को ईश्वरीय सन्देश दिया। इसके अलावा प्रदर्शनी व आध्यात्मिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। विशेष समाचार 'दैनिक जनमत' व 'आवाज़' अखबारों में प्रकाशित हुआ।

चितुर व पालमनेर—कन्याकुमारी से दिल्ली तक पहुँचने वाली पदयात्रा का भव्य स्वागत आन्ध्र प्रदेश के चितुर व पालमनेर सेवा केन्द्रों द्वारा सम्पन्न हुआ। जगह-जगह पर स्वागत गेट बनाये गये थे। सायं को पदयात्रियों का सत्कार समारोह कार्यक्रम रखा गया। इस कार्यक्रम में लगभग ४०० मुख्य व्यक्तियों ने भाग लिया तथा विशेष लाभ प्राप्त किया! इन दोनों स्थानों के विशेष समाचार 'ईनाड्' 'आन्ध्र पत्रिका व 'उदय समाचार' पत्र में प्रकाशित हुआ। इन प्रोग्रामों से कई जगह से ईश्वरीय सेवा करने का निमन्त्रण मिला है।

मेरठ—सेवा केन्द्र की ओर से दो दिन के लिए युवा पद यात्रा का आयोजन किया गया। भ्राता सतीश चन्द्र चड्डा जी द्वारा पद यात्रा शुभारम्भ की गई। सरधना रोड से यह पद यात्रा गुज़रते हुए नगला, जंगेठी, नेबड़ा पौहली, दबथुवा, बबलपुर नानु इत्यादि १० गाँवों में ईश्वरीय सन्देश दिया गया तथा बुराइयों को छोड़ने के लिए कहा गया।

अहमदाबाद नरोडा—युवा वर्ष के उपलक्ष में नारायण पुरा सेन्टर से युवक भाई बहनों ने जनता को ईश्वरीय सन्देश देने एवं आध्यात्मिक जागृति लाने हेतु एक दिन के लिए पद यात्रा निकाली। इस पद यात्रा का शुभारंभ युवा नेता श्री नाथुराम जी द्वारा किया गया। जगह-जगह ईश्वरीय सन्देश देते हुए तथा बुराइयों का त्याग कराते हुए यह पद यात्रा समाप्त हुई।

मुजफ्फर नगर—समाचार मिला है कि मखयाली के अग्रवाल पेपर मिल में एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन पेपर मिल के मालिक अनिल कुमार अग्रवाल जी ने किया। आपने प्रदर्शनी की बहुत सराहना की—इसके अलावा ग्राम अलमासपुर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी।

बिजापुर—समाचार मिला है कि बिजापुर सेवा केन्द्र की ओर से दो महीने से लेकर अब तक ५० गाँवों को ईश्वरीय सन्देश दिया गया। हर गाँव में प्रदर्शनी, प्रवचनों द्वारा लोगों को लाभ पहुँचाया गया। कई गाँवों में ईश्वरीय सेवा केन्द्र खोलने का निमन्त्रण भी मिला है।

जटनी—कटक तेलंगा बाज़ार सेवा केन्द्र की ओर से जटनी में नया सेवा केन्द्र की स्थापना का कार्य आदरणीय दादी प्रकाशमणि जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ है। यहाँ के भाई-बहनों ने उमंग व उत्साह के साथ अपना निजि मकान लेकर यह सेवा केन्द्र खोला है।

अहमदाबाद-मणिनगर—समाचार मिला है कि प्रदर्शनी, प्रवचन, प्रोजेक्टर शो द्वारा अनेक गाँवों में व शहर के कई स्थानों पर प्रोग्राम रखा गया उसके द्वारा कई हज़ार आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया गया। लगभग ३०० भाई-बहनों को योग शिविर द्वारा लाभ पहुँचाया गया। मृत्यु प्रसंग पर कई स्थानों पर प्रवचन रखे गये। अनेक आत्माओं को शान्ति का अनुभव कराया गया।

दुर्ग—सेवा केन्द्र की ओर से बार एसोसिएशन के सारे वकीलों को दुर्ग सेवा केन्द्र पर आमन्त्रित किया गया था। न्याय में आध्यात्मिकता कैसे लाई जावे इस विषय पर प्रवचन हुए। इन लोगों को राजयोग फिल्म भी दिखायी गयी। इस प्रोग्राम में वकीलों के अलावा कई और प्रमुख अतिथी भी आये थे। कुछ दिन पहले जेसीस क्लब के सदस्यों को सेवा केन्द्र पर बुलाया गया था और गुह्य ज्ञान पर आधारित सुन्दर प्रवचन हुआ और अन्त में राजयोग फिल्म भी दिखायी गयी। इन प्रोग्रामों से शहर का वातावरण काफ़ी बदल गया है। ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग की काफ़ी चर्चा है।

भंडारा—समाचार मिला है कि स्थानीय सार्वजनिक वाचनालय में राजयोग प्रदर्शनी तथा आध्यात्मिक व्याख्यान माला आयोजित की गयी जिसका उद्घाटन भ्राता जे० पी० डांगे साहेब, जिलाधिकारी द्वारा सम्पन्न हुआ। इस प्रदर्शनी को शहर के अनेक वर्गों के लोगों ने देखा तथा लाभ उठाया। व्याख्यान माला के आखिरी पुष्प में पधारे हुए प्रमुख अतिथि भ्राता मोहो साहेब इंजिनियर ने अपने विचार प्रदर्शित करते हुए आध्यात्मिक प्रदर्शनी व कार्यक्रम की बड़ी सराहना की। इसके अलावा गुरु पूजा महोत्सव के पावन पर्व पर प्रकाश हाई स्कूल भंडारा में ब्र० कु० बहनों का प्रवचन हुआ।

फिल्लौर—युवा वर्ष के उपलक्ष्य में युवकों व युवतियों के अन्दर खास आध्यात्मिकता लाने हेतु गाँवों कस्बों में तथा शहर के गली मुहल्लों में हर इतवार को प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है। फिल्लौर नगर, नंगल लसाड़ा, रायपुर, तेग, गढ़ा इत्यादि स्थानों पर प्रोग्राम रखे गये थे।

उदगीर—सेवा केन्द्र की ओर से लक्ष्मीनारायण मंदिर के भव्य भवन में स्नेह मिलन के बीच आयोजित "राजयोग शिविर सप्ताह" का अलौकिक उद्घाटन भ्राता टी० एस० जाधव न्यायाधीश ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भ्राता व्ही० एस० मुण्डे जज ने की। इस प्रोग्राम में सोलापुर उस्मानाबाद, लातूर इत्यादि सेवा केन्द्रों के भाई बहनों ने भाग लिया।

सिरसी (कर्नाटक)—शिव बाबा का सन्देश देने हेतु कुछ मुख्य माननीय व्यक्तियों के लिए खास सेवा केन्द्र पर स्नेह-मिलन का कार्यक्रम रखा गया जिसमें यहाँ के मुख्य न्यायाधीश भ्राता देश पांडे जी, डिप्टी सुपरिन्टेन्टेड पुलिस भ्राता गांडा जी, भ्राता नेवरेकर तहसीलदार मुख्य अतिथी के रूप में पधारे थे। भ्राता देश पांडे जी ने अपने भाषण में कहा कि "यहाँ पर मुझे बहुत शान्ति मिली है। इस संस्था से ही विश्व में शान्ति स्थापन होगी।"

(शेष पृष्ठ २९ पर)

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा, दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd. No 10563/65-D, (E)—70